होली चौताल संग्रह



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन

श्रीः

भगत भगवानदासकृत

होली चौताल संग्रह

★

अर्थात

दिलबहार, सामयिक और शिक्षाप्रद होली,
सोहर, भजन एवं अत्यन्त रोचक
कवित्त आदिका भण्डार

भाग पहला १.

★

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण- सन् १९९६ सम्वत् २०५३

मूल्य १५. रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

भूमिका



सब सज्जन पुरुषोंको विदित हो कि, इस ग्रन्थमें होली, चौताल, फगुआ, भजन कवित्त, सवैया, सोहर, संगीत, ध्रुपद, मलार, खेमटा, ठुमरी, बारहमासा यह सब गानेवाली चीजें छांट२ कर लिखी हैं और बनाई हैं. प्रत्येक शौकीन मित्र लोगोंके वास्ते इस ग्रंथमें रामावतार व कृष्णावतारका गुणानुवाद लिखा है। टेढा सूधा रामका भजन करना चाहिये। जो जैसे गावै उनको वैसा ही फल मिलता है और सब सज्जन पुरुषों व संतोंसे हमारी सादर प्रार्थना है कि जो कोई भूलचूक रह गई हो उसे सुधार लें, क्योंकि मैं अल्पबुद्धिवाला हूँ। इस ग्रंथके बनानेके वास्ते धर्मरत्न सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्षने मुझसे कहा था और कृपासागर पंडित श्रीकामताप्रसाद तथा पंडित श्री इंद्रदत्त संतनप्रतिपालक और राम अवतार शुक्ल तथा पंडित भगवानदत्त शुक्ल परोपकारी हमारे खास ग्रामके हैं और मुन्शी भगवान् प्रसाद हमारे उस्ताद हैं, बाबूनन्दन बड़े प्रिय मित्र हैं इन सबकी कृपासे भगत भगवानदास वल्द सुखराज मुराई जिले जौनपुर चकबढवल निवासीने बनाकर इस ग्रंथका नाम "होली

चौताल संग्रह" रखा है, इसकी कई आवृत्ति छप चुकीं, इसमें अच्छी अच्छी नई चीजें लिखी गई हैं, देखनेसे मालूम होगा। अब मैं भूमिकाको समाप्त करके सज्जन पुरुषों व संतोंको प्रणाम पैलागी करता हूँ। इस पुस्तकको उक्त श्रीमान् सेठजीके सिवाय अन्य लोग छापनेका विचार न करें।

आपका

माघ कृ० ४ गुरुवार सं० १९५०
२५ जनवरी १८९५

भगवानदास

श्रीगणेशाय नमः

अथ होली चौताल संग्रह

*

त्रिभंगी छन्द

समुझिय जनमेंको फल मनमें, हरि सुमिरनमें ही दिन भरिये। झगरो नहुतेरो घेरु घनेरो, मेरो तेरो परिहरिये ॥ १ ॥ मोहन बनवारी गिरिवरधारी, कुञ्जबिहारी पग परिये। गोपिनके संगी प्रभु बहुरंगी, होली चौताल हिये धरिये ॥ २ ॥

दोहा–प्रथमहिं सुमिरि गणेशको, शारदको शिर नाय। होली औ चौतालको, ग्रन्थ कहौं मन लाय॥१॥ अरज हमारी सुनहु प्रभु, कृष्णचन्द्र महाराज। लज्जा मेरी राखिये, गोपिनके सिरताज ॥२॥ मैं अज्ञान नादान हौं, तुम हो परम सुजान। होली औ चौतालको, दीजै प्रभु मोहि ज्ञान ॥ ३ ॥ विप्रनको परणाम करूँ, सन्तनको कर जोरि। कृपादृष्टि करिये सबै, मति मोरी है थोरि ॥ ४ ॥ लीजै सबै सँभारि तुम, भूल चूक जो मोरि। बुद्धिहीन जानूं नहीं, मैं बिनवों कर जोरि॥५॥ जिला जौनपुर मोर है, चकबढवल है ग्राम। जन्म मुराई वंशमें, भगवानदास है नाम ॥ ६ ॥ शहर बम्बई देशमें, बनो ग्रंथ हक नाव। भई कृपा भगवन्तकी, चली जगत्में नाव॥७॥ दीनबंधु करुणायतन, जो मोपर अति नेहु। नाथ विमल पदकमल अति, भक्ति पदारथ देहु ॥ ८ ॥

चौताल

तेरे चरणनकी बलिहारी महेश पियारी ॥टेक॥ हिमगिरि जन्म लियो जगतारनि, कीन्ह तपस्या भारी॥ बारह वर्ष पारथिव

पूजेहु, बर पावहु तब त्रिपुरारी ॥ महेश पियारी ॥ १ ॥ सुमिरौं आदि तुम्हैं जगतारनि, फगुआ रचौं धमारी ॥ द्वौ कर जोरि विनय करौं तुमसन, मोरे कंठकी हो रखवारी ॥ महेश पियारी ॥ २ ॥ राजा दक्ष यज्ञ इक ठान्यो, शिव आयसु कहिं पाई ॥ बरजत शंभु सती नाहिं मानत, राजा दक्षकी यज्ञ बिगारी ॥ महेश पियारी ॥ ३ ॥ बन्दौं आदि तुम्हैं जगतारनि, सुर नर मुनि त्रिपुरारी ॥ तुलसिदास बलि आस चरणकी है, तुम राखहु लाज हमारी ॥ महेश पियारी ॥ ४ ॥ १ ॥

बगियाबिच जनकदुलारी गौरि शिव पूजै ॥ टेक ॥ फल औ फूल दूध दहि अक्षत, कर कंचनकी थारी ॥ कंचन थार कपूरकी बातिन, मानो ले मंडपबिच गूँजै ॥ गौरि शिव पूजै ॥ १ ॥ पैठिपताल पूजै बम्भोला, वर मोहिं दे भगवाना ॥ अंग विभूति गले मृगछाला हो, अरु शेषनाग कर कूजै ॥ गौरि शिव पूजै ॥ २ ॥ खांड चिरौंजी मनहिं न भावे, नाये धतूरेमें डेरा ॥ शीश गंग विधुभाल विराजत, शिव श्रृंगी नाद अरूजै ॥ गौरि शिव पूजै ॥ ३ ॥ फिर २ उमा तुम्हैं सुमिरत हौं, वह मोहिं देहु भवानी ॥ तुलसिदास प्रभु आश चरणकी है, तुम परगट होय वर दीजै ॥ गौरि शिव पूजै ॥ ४ ॥ २ ॥

श्रीराम लिये अवतार सुरन हरषाये ॥ टेक ॥ अनँदबधाव अवधपुर बाजै, सखियन मंगल गाये ॥ विप्र बुलाइकै वेद उचारत, कर कञ्चन देत लुटाये ॥ सुरन हरषाये ॥ १ ॥ भइ अतिभीर धीर राजा घर, राम देखन सब आये ॥ रामको रूप कहां लगि बरणहु, मोसे उपमा वरणि नहिं जाये ॥ सुरन हरषाये ॥ २ ॥

पुरवासी सब मगन भये हैं, घर घर नाच कराई ॥ जहं देखो तहं थेइक थेइक, मानो इन्द्र उतरि पुर आये ॥ सुरन हरषाये ॥३॥ धनि धनि हौ तुम मातु कौशिला, रामको गोद खिलाये ॥ धनि तुलसी धनि धनि राजा दशरथ, धनि हौ कौशिल्याजी माये ॥ सुरनहर० ॥ ४ ॥ ३ ॥

कान्हा बांसुरी वेणु बजाइ सखि सब आइ ॥ टेक ॥ बंशी बजाय स्ववश करि लीन्हैं, सब सखियन बेलमाई ॥ चहुंदिशि सखि सब घेर लियो तब, कान्हा भूलि गई चतुराई॥ सखी सब आई ॥१॥ आसपास ललिता औ राधे, गाल मिसै मलिआई ॥ कान्हा न बोलत इत उत डोलत, राधे बंशिहु लीन्ह चुराई ॥ स० ॥ २ ॥ बंशी हमारी देदे राधे, हीरा मोती जड़ाई ॥ बंशी तुम्हारी हम नाहिं लीन्हीं है, तुम झूठ चोरी लगाई॥ सखी सब आई॥३॥ बंशीको न्याव तबै निपटै जब आवै यशोमति माई॥ सूरश्यामसे कहति राधिका, कान्हा बरबस रारि मचाई॥ सखी सब आई ॥ ४ ॥ ४ ॥

बहियां छोड़हु कृष्णमुरारी घड़ा शिर भारी ॥ टेक ॥ ऐसो ढीठ कान्ह गोकुलमे, पकड़ लियो मोरी सारी ॥ नन्द दोहाई मैं तो बेरी बेरी बरजत, तुम छोड़हु जोबन सारी॥ घड़ा शिर भारी॥१॥ एक तो लाज दुजे गोकुल बिच तीजे रैन अँधियारी॥ हांथ जोरि कान्हा पैयां परतु हौं, नाहिं जानहुं तुम घटवारी ॥ घड़ा शिर भारी ॥२॥ जो मन हो सों करहु कन्हैया, यमुना देहु उतारी॥ घाटकै नैया कान्हा औघट लावत, तुम चढो सखि प्रेमपियारी ॥ घड़ा शिर भारी ॥ ३ ॥ कृष्णमुरारी तुम्हारे

दरशको, नैया है बहुतेरी ॥ सूरश्याम रस वस भइ ग्वालिनी, कान्हा तुमसों गइ मैं तो हारी ॥ घड़ा शिर भारी ॥४॥५॥

सखि उमड़ा जोबन दुख देय रे विना बनवारी ॥ टेक ॥ छोटे बलम मैं नारि सयानी, लखि लखि मरत बिचारी॥ लोग कहैं तेरो ब्याह भयो है री, मैं तो जानत बारी कुमारी॥ बिना बनवारी ॥ १ ॥ बारे बलमकी आश लगाये, मस्त फिरौं अलसानी ॥ नाहक ब्याह पिता मोरे करि गये, बरु नैहर रहत्यू कुमारी॥ बिना बनवारी ॥२॥ हरवा कोर करै छतिया पर, विना पिय नीक न लागै ॥ सोरहों शृङ्गार उतारि धरों सखि, मानो देत पियाजीको गारी ॥ बिना बनवारी ॥ ३ ॥ पिया पिया कहि धाय भवनमें, गोदहिं लेहुँ उठाई॥ निशिदिन व्याकुल कामकला बिन, मोरे प्रीतम निपट अनारी ॥ बिना बनवारी ॥ ४ ॥ छिन अकुलाय सेज छिन आंगन, छिन चढ़ि जात अटारी ॥ द्विज हरिचरण बिरह मोहि जारत, तन वेधत मदन कटारी ॥ बिना बनवारी ॥ ५ ॥ ६ ॥

सँवला मुख रहत निहारी गेंद गहि मारी॥टेक॥ मैं जमुना जल भरन जात, पनिघटवां ठाढ़ कन्हाई ! सँगकी सखी सब दूरि निकसि गई, मैं तो इत उत रहत निहारी॥ गेंद गहि मारी ॥ १ ॥ बृन्दावनकी कुञ्जगलीमें, धरि बहियां झकझोरी ॥ एक तो सखि लिये गोदमें बालक, अरु दूजे घड़ा शिर भारी॥ गेंद गहि मारी॥२॥ करसे पकड़ि उमड़ि मुख चूमत, लोचन रहत निहारी ॥ राह चलत मोहिं कंकड़ मारत, मानो देत हजारन गारी ॥ गेंद गहि मारी ॥ ३ ॥ ऐसो है ढीठो कुँवर कन्हैया,

पकड़ि लेत मोरि सारी ॥ द्विज हरिचरण शरण सतगुरुजी, हरिके चरण बलिहारी ॥ गेंद गहि मारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

कब अइहैं कुँवर कन्हाई कलक रहिजाई ॥ टेक ॥ रोम रोम रस छाय रहे मोरी, चोलिया रहि दरकाई ॥ अंग विभूति लगाय जोगिनि भई, हम तुमही पै ध्यान लगाई ॥ कलक रहिजाई ॥ १ ॥ आप तो जाय द्वारका बैठे, हम विरहिन तलफाई ॥ ऐसे बेदरदीके दरद न लागत, मैं तो तलफत रैनि बिताई ॥ कलक रहिजाई ॥ २ ॥ तुम तो सांझ दिवसके अन्दर, लिखि पतिया भेजवाई ॥ मैं विरहिन वहि देश बसतहौं, जहां कागज मोल बिचाई ॥ कलक रहिजाई ॥ ३ ॥ उठों तो श्याम श्याम कहि बैठों, सोवौं टेर लगाई ॥ भगवानदास कहत करजोरे, कब अंगमें अंग मिलाई ॥ कलक रहिजाई ॥ ४ ॥ ८ ॥

मैं तो ऐसे बेदरदीसे हारी गई फुलवारी ॥ टेक ॥ झुकत झुकत मैं गयूँ फुलवरियां, झुकवन डार नवाई ॥ चंपकर दुह फूल लरकि गये, दोनों योवना गहे बनवारी ॥ गई फुलवारी ॥ १ ॥ अंग मोरी तोरी कलाई मुरकाई, कमर दई लचकाई ॥ रस सर्वस मोरे योबनाको लै गये, मोरी तनिक न बदन निहारी ॥ गई फुलवारी ॥ २ ॥ मैं बाला रस हाल न जानों, कच्ची कली एक तोरी ॥ ऐसे बेदरदीके दरद न लागत, मोको काम विवश करिडारी ॥ गई फुलवारी ॥ ३ ॥ कच्ची कली रस ले गये मोहन, जानी न मरम हमारी ॥ भगवानदास कहत कर जोरिके, मैं तो कोटि जतन करि हारी ॥ गई फुलवारी ॥ ४ ॥ ९ ॥

एक सांवरी सुंदरि नारी नयन गहि मारे ॥ टेक ॥ काली

चीर नहिं पहिरों सखी रे, सांवर बदन हमारे॥ सांवरे बदन पर चूनरि सोहत, दोऊ योबना उठे मतवारे॥ नयन गहि मारे॥१॥ एक मांगन मैं मांगी सखी री, उपजे अङ्ग तुम्हारे॥ कञ्चन कलस उठे छतियां पर, दिन चारिको देहु उधारे॥ नयन गहि मारे॥२॥ मांगके तुम मांग्यो हो मोहन, मारचौ प्राण हमारे॥ ये योबना मोरे सैयांके खेलौना हो, ओं तो तुमहूंते अधिक पियारे॥ नयन गहि मारे॥३॥ लरकि परे कोऊ नहिं पूंछिहैं, देहैं निहोरा लगाये॥ सूरश्याम रशवश कहे ग्वालिन, हम राखब मान तुम्हारे॥ नयन गहि मारे॥ ४॥ १०॥

निरमोहिया है श्याम हमारे लिखैं नहिं पाती॥ टेक॥ नैहरकी सुधि भूलि गई है, सासुरकी सुधि लागी॥ बिन पिय सासुर नीक न लागत, दूनों जोबना उमड़ि आये छाती॥ लिखैं नहिं पाती॥ १॥ पिय पिय रटत भई मैं काली, कोयलकी अनुहारी॥ पियाकी बोली पपिहरा बोलत, मोर कैसे बितैं दिन राती॥ लिखैं नहिं पाती॥ २॥ सोइ रह्यों स्वपना इक देख्यों, स्वपनेमें पिय आये॥ जाग उठी कतहूँ नहिं देखेहुं, मैं तो लिपटि गई दोनों पाटी॥ लिखै नहिं पाती॥ ३॥ छिन अलसाय सेज छिन आंगन, छिन चढ़ि जात अटारी॥ सूर श्याम रसबश भई ग्वालिनि, गलियांमें फिरै रसमाती॥ लिखैं नहिं पाती॥ ४॥ ११॥

मेरा पियवा विदेशमें छायो विरह दुख दीना॥ टेक॥ करिके ब्याह विदेश निकलि गयो, तनिक शोच नहिं कीना॥ अबहीं गवनकी नारि नवेली री, सखी अङ्ग अङ्ग रस भीना॥ विरह

दुख दीना ॥ १ ॥ चढी जवानी योबन तानी, दिन दिन मैन अधीना॥ ऐसो समय चलो जात सजन बिनु, छतियापर उठत नगीना॥ विरह दुख दीना॥ २॥ बिना नयनके लोग दुखित हैं, बिना द्रव्य बलहीना॥ बिन पुरुषकी नारि दुखित रहैं, ऐसे फागुन मस्त महीना ॥ विरह दुख दीना ॥ ३ ॥ निशि वासर ठाढी आंगनमें, बाट मैं जोहौं सलोना॥ भगवानदास सेज बिनु बालम, सखि लानति है एहि जीना॥ विरह दुख दीना॥४॥१२॥

बंसी बाजि चहुं ओरी, कहैं राधा गोरी॥टेक॥ नन्दलाल वृषभानुलाड़िली, संमती प्रथम करो री॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, छबि वरण कौन करो री॥ कहैं राधा गोरी॥१॥ बंशी कान गान किंकण धुनि, सुनि मुनि ध्यान टरोरी॥ झनक झनक धुनि घुंघुरू बाजत, जिन खग मृग मोहि लियो री॥ कहै राधा गोरी ॥ २ ॥ केशर रंग अंग कित मारत, आनन अबिर मलो री॥ श्रीवृषभानुसुता सखियन सँग मुरलीधर बांह गहो री॥ कहैं राधा गोरी॥३॥ त्रिविध समीर तीर यमुनाके, बहुविधि फाग मचो री ॥ भगवानदास कहत करजोरिके, तहँ आनँद सकल भयो री॥ कहैं राधा गोरी ॥ ४ ॥ १३ ॥

होरी खेलत जनक दुलारी हाथ पिचकारी ॥ टेर ॥ रूपेके थार गुलाब भरे हैं; कंचनकी पिचकारी॥ गोरे बदन नीलांबर सोहत, और मुखपर बेसर धारी ॥ हाथ पिचकारी ॥ १ ॥ पीताम्बरकी कहनी काछे, शिरमें मुकुट सँवारी॥ भरत लक्ष्मण रंग बनावत, जहँ अतरनकी अधिकारी॥ हाथ पिचकारी॥२॥ जाको भेद वेद नाहिं पावत, शेष शारदा हारी ॥ लक्ष्मण सँग

फिरे महलन बिच, कोई ले सखी रँग मुख मारी ॥ हाथ पिचकारी ॥ ३ ॥ गलियन गलियन धूम मची है, फाग खेलैं नरनारी ॥ भगवानदास कहत कर जोरिकै, हरिचरणनकी बलिहारी ॥ हाथ पिचकारी ॥ ४ ॥ १४ ॥

सखि लागेउ फागुन मास बालम सुधि छोरी ॥ टेक ॥ जस असवार सजै घोड़ाको, गहै बाग औ डोरी ॥ तैसेहि नारि योबन दूनो पालत, निज मातपिताकी चोरी ॥ बलम सुधि छोरी ॥ १ ॥ जैसे सुनार गढै सोनेको, रती रती लै जोरी ॥ तैसेहि नारि कामरस जोरत, अँग अँग रहत करि भोरी ॥ बलम सुधि छोरी ॥ २ ॥ जब नइ नारि चली पानीको, झमकके गागर बोरी ॥ अँगिया विच दूनों योवन हलकत, जैसे हंस मुरैलाकी जोरी ॥ बलम सुधि छोरी ॥ ३ ॥ जैसे कली लगै चम्पामें, तोरतको कुँभिलाई ॥ भगवानदास कोई नहिं तोरत, दूनो योबन करत मरोरी ॥ बलम सुधि छोरी ॥ ४ ॥ १५ ॥

उर बसि गये कुँवरकन्हाई सखी बेलम्हाई ॥ टेर ॥ मथुरा कान्हा जन्म लियो है, गोकुल बजत बधाई ॥ कंसासुर पूतनहिं पठायहि, सो तो दूध पियावन आई ॥ सखी बेलम्हाई ॥ १ ॥ कंसासुर इक दैत्य पठायो, पण्डित रूप बनाई ॥ रसना दीन्ह मरोरी मुरारी हो, रोवत मथुरहि जाई ॥ सखी बेलम्हाई ॥ २ ॥ मारि अघासुर आदिक मोहन, कुञ्जमें रास रचाई ॥ राधा ललितादिक सखियन कर, सब छीन रुचिर दधि खाई ॥ सखी बेलम्हाई ॥ ३ ॥ मथुरा जाय कंसको मारचो, मातु पिताको छोडाई ॥ भगवानदास कहत कर जोरिके, सखी नित उठि फाग मचाई ॥ सखी बेलम्हाई ॥ ४ ॥ १६ ॥

गोरी करिहौं मैं कौन बहाना गवन नियराना ॥ टेक ॥ सब सखियनमें चूनरि मैली. दूजे पिया घर जाना ॥ तीजे डर मोहिं सासु ननँदकी है. चौथे पिया मारैं ताना ॥ गवन नियराना ॥१॥ प्रेम नगरकी राह कठिन है. जहं रंगरेज सयाना ॥ एक बार मोरी चूनरि बोरहु. जासो पिया न करैं पहिचाना ॥ गवन नियराना ॥ २ ॥ राहमें चलत मिले हैं जहंवां. सतगुरु नाम बखाना ॥ उनकी कृपा होइहै जब मोपर. लगि जैहै मोर ठिकाना ॥ गवन नियराना ॥ ३ ॥ गुणी माथ कछु गुण नहिं सीख्यो, अवगुण हृदय समाना ॥ कहत कबीर सुनो सतगुरु तुम, अब फिरि न बहुरि जग आना ॥ गवन नियराना ॥४॥१७॥

सखि फागुन मास जनाई श्याम नहिं आई ॥ टेक ॥ जबसे श्याम गये परदेशवा, छिन छिन जिय अकुलाई ॥ भोजन भवन सबै हम त्यागेहु. कुलकी सब लाज गंवाई ॥ श्याम नहिं आई ॥ १ ॥ कौनसि चूक परी मनमोहन. जो मेरी सुरति भुलाई ॥ हमको त्यागि विदेश सिधारेहु. मथुरा नगरीको बसाई ॥ श्याम नहिं आई ॥२॥ नहिं कोई आवत जात पथिक तहँ: लिखि पाती भिजवाई ॥ भूलि गये सब नेहकी बातन. वह कहां गई चतुराई ॥ श्याम नहिं आई ॥३॥ चोवा चन्दन ना कछु भावै. ना हँसि बोल सुहाई ॥ भगवानदास कहत कर जोरिके. कान्हा वेगि मिलो तुम आई ॥ श्याम नहिं आई ॥ ४ ॥ १८ ॥

कैसे बीतैं फागुन दिनराती, पिया नहिं आये ॥ टेक ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर, रहत सकल व्रज छाये ॥ आप तो जाय बसे कुबरीसङ्ग, मोहिं विरह वियोग जनाये ॥ पिय

नहिं आये ॥ १ ॥ विकल भई राधे औ ललिता, रहत नयन जल छाये ॥ कान्हा कि सुरति हृदयबिच शालत, ऊधो तरसिकै रैन बिताये ॥ पिया नहिं आये ॥ २ ॥ निशिवासर सब मस्त फिरत हैं, छिन छिन विरह जनाये ॥ मनमोहन आपु न अइहहिं, विधि नाहक नेक लगाये ॥ पिया नहिं आये ॥ ३ ॥ सुन्दरि नारि फिरै मदमाती, पपिहा शोर मचाये ॥ गाये तो रामशरन शिवशंकर, विधि झूठ शोर मचाये ॥ पिया नहिं आये ॥४॥१९॥

मेरो सैयां विदेश सिधारे कासे खेलौं होरी ॥ टेक ॥ सासु ननँद दुख देति हैं दारुण, सवति करत बरजोरी ॥ दुखकरमूल पड़ोस मिला मोहिं, सखी कैसेके बास बसी री ॥ कासे खे० ॥१॥ खान पान मोहिं कुछ न सोहाई, भूषण भार लगो री ॥ चिन्ता अनल दहत निशिवासर, दोनों नयनन नीर बहो री ॥ कासे खेलौं होरी ॥ २ ॥ नहिं आये नहिं पाती पठाये, केहि विधि धीर धरों री ॥ फागुन मास बितावत ऐसेहि, सखि कौन उपाय करों री ॥ कासे खेलौं होरी ॥ ३ ॥ जो विधिना लिखि दियो लिलारे, सो नहिं टारे टरो री ॥ भगवानदास कहत कर जोरिकै, पिय सहज ही आइ मिलो री ॥ कासे खेलौं होरी ॥४॥ २०

गोरी तिरछी नजर तोहि माला बान काहे मारे ॥ टेक ॥ योगी मुनिनकर ध्यान छुटा है, कामिनि नयन निहारे ॥ कमरकी पतरी नयनकी तिरछी, दोनों योबना हैं जुलुमकटारे ॥ बान काहे मारे ॥ १ ॥ सुरति दिखायके मूर्च्छित कीन्हेहु, सुधि नहिं रहत हमारे ॥ नैननसे नयना दोनों मोहेहु, गोरी चितवनिसे जिया मारे ॥ बान काहे० ॥२॥ जैसे मदारी जगतको मोहत,

वैसे मोहनि डारे॥ धनि तोर बाप धन्य महतारी है, गोरी धन्य हैं ससुर तुम्हारे॥ बान काहे मारे॥३॥ की बिधिना तोहिं गढिके बनाये, को सांचेमें ढारे॥ भगवानदास कहत कर जोरिकें, गोरी दुनियाँ को वश कर डारे॥ बान काहे मारे॥ ४ ॥ २१ ॥

गोरिया भइ हैं यौवनवांकी बारी तो अबहीं कुवाँरी॥ टेक॥ खेल रही अपनी लड़िकैया, सब सखियनमें उघारी ॥ जब छतियनपर उमडहु योवन, तुम कपड़ा पहिरिलो दुलारी ॥ तो अबहीं कुवाँरी ॥ १ ॥ ब्याहका बाजा बाजन लागे, आँगन होत तयारी ॥ सब सखियां मिलि साज सजन लगीं, गोरी ससुरेकी होत तयारी ॥ तो अबहीं कुवाँरी ॥ २ ॥ मेरे सँगकी सखी सहेली रचि रचि मांग सँवारी ॥ आगे आगे मोर सैयां चलत हैं री, मानो पीछेसे डोलिया हमारी॥ तो अबहीं कुवाँरी ॥ ३ ॥ लेकर डोला ससुर घर पहुँचे, भई कोहबरे तयारी ॥ भगवानदास कहत कर जोरिके, गोरी पियासँग सोवत अटारी॥ तो अबहीं कुवाँरी ॥ ४ ॥ २२ ॥

सखि बिन पिया बिरह सतावै नैहर नहीं भावै ॥ टेक ॥ सांई नगरी है अति सुन्दर, जहँ कोउ आवै न जावै ॥ चन्द्र न सूर्य्य पवन नहीं पानिहु, तहँ को संदेश पहुँचावै ॥ नैहर नहीं भावै ॥ १ ॥ आगे चलत पन्थ नाहिं सूझत, पाछे दोष लगावै ॥ ससुरे जाऊं कौन विधि सजनी री, सखि विरहा जोर जनावै ॥ नैहर नाहिं भावै ॥ २ ॥ बिन सतगुरु कोउ हितू न अपना, कौन राह बतलावै ॥ अबकी मिलन सजनका कठिन है हो, मानो विधना जो आनि मिलावै ॥ नैहर नहीं भावै

॥३॥ पांच पचीसहि को समुझावै, चितका रंग बतावै ॥ लैके अबीर ज्ञान पिचकारी हो, भगवानदास सो चलावै ॥ नैहर नहीं भावै ॥ ४ ॥ २३ ॥

तुम चेतहु चतुर सयाना काल नियराना ॥ टेक ॥ बाप अजा परअजा चले गये, जैसे ही तुमको जाना ॥ धन दौलत अरु कुटुम कबीला हो, मानो कोई संग नहीं जाना ॥ काल नियराना ॥ १ ॥ नेकी बदी जु ईश्वर देखैं जिसको तूने भुलाना ॥ पाप पुण्य दोऊ संगी तिहारे हैं, मानो लेकर बदला भराना ॥ काल नियराना ॥ २ ॥ करना होय सो कर ले प्यारे, नहीं तो फिर पछताना ॥ फिर फिर जन्म न होय जगतमें, तहवां न रहत निशाना ॥ काल नियराना ॥ ३ ॥ हंसा रहा सो भागि चला गया, देहियां माटी मिलाना ॥ भगवानदास कहत कर जोरे हो, तुम अबहूंते करहु ठिकाना ॥ काल नियराना ॥ ४ ॥ २४ ॥

देखो देशमें रेल चलाई चलाई खबर पहुंचाई ॥ टेक ॥ ऐसे अकिल लगाई फिरंगिया, धुवां की गाडी बनाई ॥ पांच कोश पर टेशन बनाई है, अरु तापर तार लगाई ॥ खबर पहुंचाई चलत रेल चिकार महाअति, जब कल देत घुमाई ॥ भाजत पलक फरक योजनपर, जाको पवन वेग नहिं पाई ॥ खबर पहुंचाई ॥ २ ॥ जबतक रेल प्रचंड भई है, सब रोजिगार मिटाई ॥ लैकर माल धनी कर बोझत, मानो कोस अधन्नी लगाई ॥ खबर पहुंचाई ॥ ३ ॥ मुये गरीब धनी सुख पावत, देशको अन्न मंगाई ॥ भगवानदास कहत कर जोरे हो, कभी ऐसी राज नहीं आई ॥ खबर पहुंचाई ॥ ४ ॥ २५ ॥

दोहा

राजा बाजा राग मिलि, गावत संत सुजान। भूल चूक कर अक्षरै, कीजे एक मिलान॥ फागुन मास वसन्त है, सब गावत चौताल। डफ मंजीरा झांझ अरु, मृदंग हाथ करताल॥ चौताल न वर्णन करो, सब सन्तन शिर नाय। भगवानदास कर जोरि कह, दीजे ग्रन्थ बनाय॥ दीनानाथ दयाल प्रभु, पूरण कीजै आस। भगवानदास कर जोरि कह, दूरि करो तनु त्रास॥ कीजै चित्त सोई तरे, ज्यहि पतितनके साथ। मेरे गुण अवगुणनको, गिनौ न गोपीनाथ॥

होली

मोरी कान्हा उतारो गागरिया लपकि। मेरी नाजुक बहियां तो गई है लचकि॥ एक तो जमुनजल पावन दूजो, भरत उठावत ऊँच चढैया॥ कठिन कठोर पंथबिच कंकड़, सहि न जाय गति उदय करैया॥ धरत धरणि पगु परत चमकि॥ १॥ एक को भारी भार शिर ऊपर, दूजे पवन बहै पुरवैया॥ मेरी कुसुमकी सारी भिजतु हैं, जल भरने जाय हमरी बलैया॥ माथेकी बेंदिया तौ गई है खसकि॥२॥ व्रजके लोग विलोकि हँसतु हैं, इत उत डोलौं करि चतुरैया॥ लाज लजावन जाउं बहुरि घर, बनवारी वृषभानु दुहैया॥ तासेकी अँगिया तो गई है मसक॥ ३॥ सांवलि सूरति मोहिनी मूरति, विसरत नाहिं मोहि राम दोहैया। सूरश्याम मोहिं आनि मिलावो, वे न मिले मेरे चितके हरैया॥ जासे मिटत मेरे जियकी कसक॥ ४॥ १॥

अबीर गुलालसे गाल लाल रङ्ग केशर रङ्ग भरे॥ टेक॥

जलद श्याम कामिनिद्युति दामिनि, चितवत चित्त हरे ॥ २ ॥ सूरश्याम नित फाग मचावत, कुञ्ज कदम्ब तरे ॥ ३ ॥ २ ॥

पिचकारीसे मुरारी भरि मारी रे ॥ टेक ॥ भरि पिचकारी मेरे मुखपर मारी भीज गई तन सारी रे ॥ १ ॥ तुम तो ढोटा नंद महरके, हम वृषभानु दुलारी रे ॥ २ ॥ बरजत हौं बरजो नहिं मानत, हमहूँ देहौं अब गारी रे ॥ ३ ॥ वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें, बरजो ना मानै गिरधारी रे ॥ ४ ॥ सूरश्याम नित फाग मचावत, बहियां पकड़ि दीन्हीं गारी रे ॥ ५ ॥ ३ ॥

अब काहे वचन कठोरे ॥ कैकेई तब तो कह्यो राम प्रिय मोरे ॥ टेक ॥ जेहि मुख राम लक्ष्मण वन दीन्हों, जीभ न गिर गई तोरे ॥ १ ॥ भरतको राजा राम बनवासी, लाज न लागत तोरे ॥ २ ॥ रामसे कहु रे अयोध्यामें रहहीं, राज करत सुत तोरे ॥ ३ ॥ गावै गुदर मति देवन फेरी, कैकेयीको अपयश दे रे ॥ ४ ॥ ४ ॥

ये दोउ खेलत फूल फाग री ॥ टेक ॥ आये बसन्त सकल वन फूले, कोयल बोलत सरस राग री ॥ उमँगे आनँद अवध अधिकाने, भूप द्वार होरी होन लाग री ॥ १ ॥ बाजत ताल, मृदंग झांझ डफ, मध्य सुरन भये मधुर राग री ॥ सुनत श्रवण हर विधि उठि धाये, नहिं भावत जप जोग जाग री ॥ २ ॥ इतते रामसखा जुरि आये, सिय समाज रंग अमीत गागरी ॥ मचे कीच मगबीच अवधपुर, मुनि मज्जन मानो मकर प्राग री ॥ ३ ॥ भीजि गई तन चीर चादरी, पट जामा औ रूमाल पागरी ॥ महाराज महारानी को भयो, एक रंग अरुणार बागरी ॥ ४ ॥ ललकारत सिय ललित लाडिली, पकडि पानि पट

झमकि झागरी ॥ लपकि झपकि गई लपटि रामजीसे, पिय प्यारीजीको भाग री ॥ ५ ॥ जो अलि ओट अटन चढि बैठीं, रति मलीन वे अमित उजागरी ॥ उझकि रुझकि बिधुवदन देखावत, हँसत खसत मानो डँसत नाग री ॥ ६ ॥ फगुवा देहु मँगाय लाल मोहिं, जनकसुता कह सुनहु नाथजी ॥ तुलसिदास अनुकूल जानि जिय, लियो सबै वरमूल माँग री ॥ ७ ॥ ५ ॥

व्रजमें खेलन मति जावो हो लाल कोइ रंग डारी देइहैं ॥ ॥ टेक ॥ व्रजकी नारि सबै मदमाती, तुमको पकडि लिअइहैं ॥ लाल कोइ रंग डारि दइहैं ॥ १ ॥ छीन लेहिं बनमाल मुरलिया, शिरसे चुनर ओडईहैं ॥ लाल कोई रंग डारि दइहैं ॥ २ ॥ बेंदी भाल नयन विच काजर, नक बेसर पहिरइहैं ॥ लाल कोई रंग डारि दइहैं ॥ ३ ॥ सूरश्याम बरजो नहि मानत, रोवतही फिर अइहैं ॥ लाल कोई रंग डारि दइहैं ॥ ४ ॥ ६ ॥

बंशी बजाय पिआय जहर कछु करि गयो मोहिं कन्हैया ॥ टेक ॥ रोम रोम विष भीन गयी है, कासों कहौं दुख कोई न सुनैया ॥ है कोई वाको आनि मिलावै, औषधि हमको कोई न देवैया ॥ ऐसी डँसी नाहिं देत लहर ॥ १ ॥ श्रवण न सुनहु नयन नाहिं देखों नहिं सूझत कछु काह रे मैया ॥ वृन्दा-वनको कुञ्जगलिनमें ढूँढ़ि फिरी बाबाकी दोहैया ॥ कहवाँ गये सुत नंदमहर ॥ २ ॥ प्रेम सहित हरि आइ मिलो है, मत देखी बनहिं चरावत गैया ॥ सूरश्याम गर लाइ लियो है, सखियन बीच नृत्य करवैया ॥ झरि गये विष नहिं लाग गहर ॥ ३ ॥ ७ ॥

साँवरेजीको चरित सुनो री ॥ टेक ॥ एक समय व्रजकी

बनिता सब, हरषि चलीं जल ओरी॥ मज्जन हेतु धँसी यमुनामें, कोई साँवरि कोई गोरी॥ करै जलमें झकझोरी॥१॥ ताहि समै ब्रजराज साँवरो, जाय तहाँ पहुँचो री॥ लेकर चीर कदम्बके ऊपर, चढ़ि गये नंदकिशोरी॥ मुदित आनंद भयो री॥२॥ ताहि समय पट ढूँढ़न निकलीं, कहूँ नहिं दृष्टि परो री॥ तामें एक सखी उठि बोली, देखो कदमकी ओरी॥ चीर सब जाय धरो री॥३॥ तिनमें एक चतुर ब्रजवनिता, प्रेम अधिक रस बोरी॥ शीश नवाय कहति पट दीजै, हाहा करत बहोरी॥ श्यामसे दोउ कर जोरी॥४॥ बोले श्याम मधुर रस बतियाँ, तुम सब लाज तजो री॥ लाज छांड़ि सन्मुख सब आवो, नखसिख सब देखों री॥ प्रीति यह जानत मोरी॥५॥ हिलमिल फाग परस्पर खेलत, इत साँवर उत गोरी॥ सूरश्याम आनंद भयो है, सुधि बुधि सब बिसरोरी॥ जगतमें हो रही होरी॥६॥८॥

साँवरोजीसे कहियो मोरी॥टेक॥ निशिदिन व्याकुल फिरत राधिका, विरह व्यथा तनु घेरी॥ श्याम तुम्हें ढूँढ़त कुंजनमें, शीश जटा लट छोरी॥ चलो रे हो होहारे होरी॥१॥ भूषण वसन सबै तजि दीन्हों, खान पान बिसरो री॥ विभूत रमाय योगिनि बन बैठी, तेरो ध्यान धरो री॥ वेगि किन आवो किशोरी॥२॥ शीश नवाय चरण गहि लीन्हों, करि विनती कर जोरी॥ हरि ऐसी चूक परी कह मोसों, प्रीति पाछिली छोरी॥ सुरत क्यों न लीन्हीं मोरी॥३॥ रोम रोम विष भीन रहो है, विधि मेरी वैर परी री॥ बाल करेजा जराय दियो है, अब मैं काह कहों री॥ धीर नहिं जात धरो री॥४॥ सूर श्याम हरिसे जाय

कहियो, अवधि आश रही थोरी ॥ प्राणदान दीजै यदुनंदन, कीरति गावों मैं तोरी॥ श्याम फिरि आवो बहोरी॥५॥९॥

ब्रजमें हरि होरी मचाई॥ टेक ॥ इतते आवत नवल राधिका, उतते कुंवर कन्हाई ॥ खेलत फाग परस्पर हिलमिल, शोभा वरणि नाहिं जाई ॥ नंदघर बजत बधाई ॥ १ ॥ राधा जू सैन दियो सखियनको, झुंड झुंड ह्वै धाई॥ लपटि झपटि गई श्याम-सुन्दरको, कर धरि पकडि मँगाई ॥ लालजीको नाच नचाई ॥२॥ छीन लई मुरली औ पिताम्बर, शिरसे चुनरि ओढाई॥ बेनी भाल नयनबिच काजर, नकबेसर पहिराई ॥ सुघर नई नारि बनाई ॥ ३ ॥ मुसकत हो मुख मोरि मोरिके, काह भई चतुराई ॥ कहां गये तेरे नन्दबाबाजी, कहवां यशोमति माई॥ लालको न लेत छोड़ाई ॥ ४ ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, मंजीरा सहनाई ॥ उडत गुलाल कुमकुमा केसर, रहत सकल ब्रज छाई॥ मानो मघवा झरि लाई॥५॥ फगुवा लिये बिन जाने न देहौं, करो तुम कोटि उपाई॥ सूरश्याम बलि आस चरणकी, तुम ब्रज चोर चुराई॥ बहुत दिन दधि मोरी खाई॥६॥१०॥

दे दीजो आली वंसी हमारी प्यारी ॥ टेक ॥ यह वंशी अनमोल राधिका, हीरा लगे आरी आरी ॥ फणि पर सहस मणिनकी बनी है, शब्द सुनावै न्यारी न्यारी ॥ वंसी मोरी प्राणपियारी ॥ १ ॥ का जानौं तोरी बांसकी बँसिया, कहवां छोड़े बनवारी ॥ जहवां भूले तहँ जायके ढूँढ़ो, हम तो नारि गवारी ॥ एक पोर वंसी तुम्हारी॥२॥ तुम्हरे दृगन कुछ मोल नहीं है, हमरे यही धन भारी॥ पायी होय तो दै देवे राधिका,

बार बार बलिहारी ॥ कहैं राधासे मुरारी ॥ ३ ॥ हँसके बोली चतुर राधिका, तनिक नाचो गिरिधारी ॥ मुरली मनोहर हम देइ देवें लेइलो रासविहारी ॥ लषण उर बसत मुरारी ॥ ४ ॥ ११ ॥

बरजो री यशोदाजी कान्हा ॥ टेक ॥ मैं यमुना जल भरन जात री, मारग निकस्यो आना ॥ बरजत ही मोरी गागरि फोरी, लै अबीर मुख साना ॥ सखी सब देती हैं ताना ॥ १ ॥ ताही समय आये नन्दनंदन, आवत ऐसन ठाना ॥ ये सब मैया मोंको बहुत खिजावैं, नैनन देइ देइ सैना ॥ उलटी आई उरहाना ॥२॥ मेरो लाल पलनामें झूलै, बालक है नादाना ॥ ये कह जाने रसकी बतियां, नहिं जाने खलक जहांना ॥ भूल रही हो तुम ज्ञाना ॥ ३ ॥ तुम सांची तुम्हरो सुत सांचो, हमहीं करत बहाना ॥ सूरश्याम ब्रजवासिन त्यागे, ब्रजमें अनत न जाना ॥ करो अपना मनमाना ॥ ४ ॥ १२ ॥

सांवरेको अरज लगी मोरी ॥ टेक ॥ घाटबाट घर बाहर मोहन, करत फिरत होरि होरी ॥ कौनसी है वृषभानुनंदिनी, को ब्रजराजकिशोरी । कही मानो सखि मोरी ॥ १ ॥ मैं दधि बेचन जात वृन्दावन, पहिरि कुसुम रङ्ग सारी ॥ बीच मिल्यो मोहि नन्दनंदन री, बहियाँ पकडि मरोरी ॥ मुकुट मुरलीधर तोरी ॥ २ ॥ एक दिना मोहिं आय अचानक, मोहन द्वार मिल्यो री ॥ लपटि झपटि सारी मोरी फारी, अँगिया केशर रंग बोरी ॥ मेरे मुख मींजत रोरी ॥ ३ ॥ शेष गणेश महेश विचारैं, शारदकी मति भोरी ॥ सूरश्याम सोई नित मोसों खेलत फाग बहोरी ॥ चिरञ्जीव रहो यह जोरी ॥ ४ ॥ १३ ॥

रघुवरजीसों वैर करै ना ॥ टेक ॥ शतयोजन मर्याद सिंधुकी, सो कोई बाँधि सकै ना॥ ताहि बांधि उतरे रघुनन्दन, संग भालु कपि सैना ॥ समर कोई जीति सकैं ना ॥ १ ॥ होलीसो लंक जलाय दई है, अब कोउ भागि बचै ना॥ करि करि दाँव वीर सब थाके, पावक प्रबल बुझै ना॥ जुगुति कछु एक लगै ना ॥ २ ॥ तुम जीवत अहिवात हमारो, सांची कहौं पिय बैना ॥ कीन्हें रारि नहीं बनि अइहैं, तासों जाय मिलै ना ॥ भागि तिहुँलोक बचै ना ॥ ३ ॥ मैं तिरिया बहु भांति सिखाओं, निशिचर कान करै ना॥ तुलसीदास मूढ़ भयो रावण, फूटे हियेके नैना॥ ताहि कछु सूझि परै ना ॥ ४ ॥ १४ ॥

श्रीगणेश सोहाग मेरो, मैं तो फागुन पिया को बनावत रे ॥टेक॥ पहिले मैं पूजौं गौरीको गणपति, मोरा सोहाग बढावत रे ॥ १॥ सोनेके छत्र धरो शिर ऊपर, फूलन मन्दिर छवावत रे ॥२॥ चन्दन अक्षत बेलकी पाती, नित उठि शिवको चढावत रे ॥ ३ ॥ सूरश्याम बलि आश चरणकी, हरिके चरण चित लावत रे ॥ ४ ॥ १५ ॥

मैं तो कृपानिधि शरण तिहारी ॥ टेक ॥ छत्रपती राजा दुर्योधन, लागी सभा अतिभारी ॥ बैठे भांति भांतिके राजा, तिनबिच करत उघारी॥ कहा प्रभु मरजी तिहारी॥१॥ मैं तो भरोसे तिहारे रहति हौं, निशिदिन कुञ्जविहारी॥ आवो बेगि दया अब कीजे, नहीं तो होत उघारी॥ लाज मोरी जात मुरारी ॥ २ ॥ चीर प्रवेश भये प्रभु तुरतै, बढेहु दसन अधिकारी ॥ खैंचत खैंचत भुजबल थाके, बैठे मनै मन हारी ॥ छांडि दई

द्रुपदकुमारी ॥ ३ ॥ सूरदास सन्तनके रक्षक, राधारमण मुरारी आय दयालु भये दासिन पर, राखी लाज हमारी ॥ करी हरी व्रजकी तयारी ॥ ४ ॥ १६ ॥

खेलत अवधविहारी अनुज लिए सङ्ग मुरारी ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृतकुण्डल, काम कोटि बलिहारी ॥ लक्ष्मण हाथ रंग लिए ठाढे, राम हाथ पिचकारी ॥ १ ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, और बजत करतारी ॥ उड़त गुलाल घटा घन घेरे, लै अबीर मुख मारी ॥ २ ॥ हिलमिलि फाग परस्पर खेलत, शिव समाधि है टारी ॥ श्यामल गौर किशोर मनोहर, प्रीति रङ्ग अति भारी ॥ ३ ॥ इतमें रामसखा सब छिरकत, उतमें राजदुलारी ॥ केशरि कीच मची गलियनमें, तुलसिदास बलिहारी ॥ ४ ॥ १७ ॥

पवनतनय आजु धूम मचाई ॥ टेक ॥ वारिधि नांघि गये लंकामें, तहं पर जाय छिपाई ॥ व्याकुल देखि सियाको तबहीं, मुंदरी दिये गिराई ॥ सिया हिय हर्षि उठाई ॥ १ ॥ मुंदरी देखि सिया अति भरमी, मनमहँ तर्क बढाई ॥ सुमिरन कीन्ह प्रकट तब भयऊ, सियसन आशिष पाई ॥ धरचो तब उपवन जाई ॥ २ ॥ उपवन जाके पेड़ उपारचो, पावक दियो लगाई ॥ पूछ बांधि पट तेल चुवायो, पावक दियो लगाई ॥ चढेउ कपि गढपर धाई ॥ ३ ॥ कूद फांदिकै पुर सब जारत, दशमुख हिय अकुलाई ॥ हाय हाय लंक समाई ॥ ४ ॥ १८ ॥

ऊधोजी कब ऐहैं कन्हाई ॥ टेक ॥ कातिक चन्द्र उजेरे अगहन, है यह अरज हमारी ॥ पूसमें आनि मिलैं जो मुरारी, तनुकी व्यथा सब जाई ॥ कहत हम शीश नवाई ॥ १ ॥ माघ

मास मनको समुझावों, फागुन मदन सतावै॥ चैत मासमें फुली फुलवारी, चातक शोर मचाई॥ हमैं निशिदिन तरसाई॥२॥ लग वैशाख सखी व्रज सूनो, जेठ विरह दुख दूनो॥ आषाढै आस लगायके बैठी, कब मिलिहैं यदुराई॥ सकल दुख जात पराई॥३॥ सावनमें सखी सगुन विचारी, भादौं सेज सँवारी॥ कह भगवानदास कर जोरे, क्वार मिले प्रभु आई॥ कहत सब हाल बुझाई॥ ४ ॥ १० ॥

इति होरी समाप्त

फगुआ धमार

सुमिरहु राम अनन्दा हृदय भारि॥टेक॥ अवधपुरी श्रीधामा, जहँ जन्म लियो श्रीरामा, सरयू वहत जलनीरा, दुखपापौ न रहै शरीरा॥ शन्तनकी भक्ति पियारी, तहँ देखा हृदय विचारी, जहँ तहँ सन्तनका डेरा, मैं तहां तहां प्रभु हेरा॥ हिरणाकुशको मारे प्रहलादाहिं कीन्ह उबारे, मारे कौरव सो भैया, तब लंकाको कीन्ह चढैया॥ उतरे सागर तीरा, अति बाँधे सेतु गंभीरा, तापर सेना उतारे, सब निशिचर जाय सँहारे लंकापतिको मारे, देवतनकी बंदि छुड़ाये, राज्य विभीषणको दीन्हा, तब उतारि गवन हरि कीन्हा॥ राजा जनककी वारी, गोतमकी नारी पियारी, पायन परत जँजीरा, होरी गावै दास कबीरा॥१॥

राधा खेलैं रंग होरी विरजमें॥ टेक॥ पहिरे सूआ सारी, रज सेंदुर मांग सँवारी, पायन बिछुआ बजावै, तब शब्द झमाझम लावै॥ राधा व्रज ललिता संगा, कर गहे मथानी

अंगा, गावैं गीत रसाला, दधि बेचै चलीं व्रजबाला॥ तहँ बीच मिले नँदलाला, तब रंग सबोंने डाला, पीछे कान्हा भरे पिचकारी, तब रंग सबन पर डारी॥ हे हो कुञ्जविहारी, तुम घरघर करते हो रारी, दहिया छोरि छौनके खाये, दिन चारीके मर्द कहाये॥ राधा चलीं पराई, तब देखा कुँवर कन्हाई, कान्हा गहिमारी पिचकारी, तब भीज गई तनु सारी ॥ नन्दमहरके बारे, नित रंग हमैं पर डारे, सावरके करे भरोसे, नित रगर मचाये मोसे॥ नन्दरायके बारे तुम गौवनके रखवारे, भीतर मातु यशोदा रानी, बन बेचैं दहीमें पानी॥ अहो श्याम मैं हारी, राधाजीकी शरण तिहारी, वेणु बाँसुरी जाय बजाया, यमुना तट फागु मचाया॥ राधा औ ललिता गोरी, अति रुचि फाग खेलो री ॥ हियसे सूरदास पद गाया, गोपिन सँग फाग मचाया ॥ २ ॥

सुनो जनककी बतियां सखिया ॥ टेक ॥ राजा जनकजी प्रण इक ठान्यो, द्वारे धरे पिनकिया॥ देश देशके भूपति आये, टारे न टरै पिनकिया॥ बाणासुर रावण चलि आये, ओहू भागे अधिरतिया ॥ मुनिके संग दो बालक आये, उन धारि तोरा पिनकिया ॥ तुलसिदास प्रभु आस चरणकी, बरे सिया यहि भँतिया ॥ ३ ॥

सिय डारे राम गले जैमाला ॥ टेक ॥ दूलह तौ श्रीराम बने हैं, लछिमन देवर सहबाला ॥ समधिनि तौ बनि मातु कोसिला, दशरथ समधी महिपाला ॥ जिनके शम्भु बराती आये, ओढे दिगम्बर मृगछाला ॥ तुलसिदास बलि आश चरणकी, सुर बोलैं जय जय काला ॥ ४ ॥

जनकके आंगनमें भीर भारी ॥ टेक ॥ रथ तुरंग चढि चले बराती, औ गजकी असवारी ॥ झाँकैं झरोखे परम सुन्दरी, आवत अवध विहारी ॥ जुटि रनिवास जनक गृह आई, बोलैं वचन दिहारी ॥ बाँधत राम सियाजीके कंकण, गहि गहि गांठी सँवारी॥ सब रनिवास बिहँसिके बोलीं, देत लालको गारी॥ जो यह राम छुटै नहिं कंकण, हारि जाहु महतारी ॥ इतना सुनत जनकजी बोले, क्या सकुचावो नारी॥ जेहिं भुजबल शंकर धनु तोरा, कंकण कौन बिसारी॥ इतना सुनत सिया सकुचानी, तनुकी दशा बिसारी ॥ देन दान सखियां सब लागीं, तुलसिदास बलिहारी ॥ ५ ॥

रथपर निरखत जात जटाई ॥ टेक ॥ विप्ररूप धरि आयो निशाचर, भिक्षा दे मोहिं माई॥ लैके भिक्षा निकसीं जानकी, रथपर लियो चढाई ॥ रथपर ब्याकुल भई जानकी, हमकौ लेत छुडाई॥ इतना सुनि खगपति उठि धाये, हांक देत नगिचाई॥ काकी तिरिया काहा नाम है, कौन हरे तोहिं उत्तर जाई ॥ दिशि इक नगर अयोध्या, दशरथ सुत रघुराई॥ ताकी नारि नाम है सीता, हरे निशाचर जाई ॥ चोंचन मारि महा युध कीन्हों, रथसे दीन्ह गिराई ॥ अग्निबाण तब मारि निशाचर, पंख चोंच जारि जाई ॥ तुलसिदास प्रभु मिलन रामके, कहब कथा समुझाई ॥ ६ ॥

पवनसुत कौन दिशासे आये ॥टेक॥ केकर पुत्र केकर तुम पायक, केहि तोहि कुँवर पठाये ॥ कहँ छोडे राम कहां छोडे लक्ष्मण, कहां मुद्रिका पाये॥ बन छोड़े राम बनै छोड़े लक्ष्मण,

बनै मुद्रिका पाये ॥ तुलसिदास बलि आश चरणकी, सियाकी खबर जनाये ॥ ७ ॥

वंसी किसने बजायी हो मधु जमुनतीरवारे कन्हैया ॥टेक॥ बंसी शब्दिया गै गोकुलमें, आयल आज अहीर। सोरहसै ग्वालिन किये शृंगार, दधि बेचन यमुना तीर॥ १ ॥ इधरसे आई राधे हो, उधरसे आये कान्हा॥ मारैं पिचकारी हो, राधे झोंके अबीर॥२॥ एक तो राधा सुन्दरी हो, दूसरे परा अबीर॥ कान्हको भीजै जोड़ा जामा, राधेकी चोली चीर॥ ३ ॥ दोनों शहरके अंतरमें, भइ चोवनकी हील।। राधेकृष्णके फगुआ हो, गावै दास कबीर ॥ ४ ॥ ८ ॥

मोहन मोहिं जाय दे जमुना पानी ॥ टेक ॥ शिरपर घडा घडापर झारी, तापर अभरन भारी ॥ १ ॥ हथवां चुनी गुलेल लगाये, गागरमें हनै निशानी ॥ २ ॥ जाही बदे तुम रोको टोको, सोउ मरम हम जानी ॥ ३ ॥ दूर होउ कोइ देखत ह्वैहै, हम घर जाब सानी ॥ तुम तो ढोटा नँदमहरके, मोहिं वृषभानुको जानी ॥ ४ ॥ सूरश्याम बलि आश चरणकी, तुम जीते हम मानी ॥ ५ ॥ ९ ॥

जमुना बिच नैया लगाये कन्हैया, तनिक दहीके कारण ॥ टेक ॥ काहे काठकी नैया बनी है, काहे लगी करुआरी ॥ चन्दन काठकी नैया बनी है, सोने लगी करुआरी ॥ के के वाही नैया चढ़त हैं, केहैं खेवन वाला ॥ राधा रुक्मिणी नैया चढतु है, माधो खेवन वाला ॥ सूरश्याम सब नृत्य मचावैं, गोपी और सब ग्वाला ॥ १० ॥

नदियां बही चली जलधारा ॥ टेक ॥ जैसे पुरइन जलमें उपजै, जलमें करै पसारा ॥ उनके पात पानि नहिं लागै, ढरकि परै जैसे पारा॥ जैसे सती चलै सत ऊपर, पिया बचन नहिं टारा ॥ आप तरै औरोंको तारै, तारै कुलपरिवारा ॥ जैसे शूर चढै रण ऊपर, पीछे पगु नहिं टारा ॥ उनकी सुरति रही लडनेकी, प्रेम मगन ललकारा॥ भवसागर इक नदी बहत है, लख चौरासी धारा ॥ कहैं कबीर उतरिगे संता, पापी बुडे मजधारा ॥ ११ ॥

कवित्त

घर तजों वन तजों नागर नगर तजों, बसीराम सब तजि कान्हूपै न लजिहौं।। देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसे तजों आज काज राज बीच ऐसे साज सजिहौं ।। बावरे भये हैं लोग बावरी कहत मोकों, बावरी कहते मैं हूँ काहू न बरजिहौं ॥ कहैया सुनैया तजों, बाप अरु मैया तजों, दैया तजो भैया पै कन्हैया नहिं तजिहौं ।। १ ।।

बांसुरीकी धुनि सुनि आई तजि लाज काज, साई ब्रजराज साज समय बीते गये ।। मन्द मुसुकायके लोभाय मन हाय हाय. रूप रस प्यास प्रेम चितौन चित गये ।। कहैं बलदेव मीच बाणसी है मारी तान, लेके तुम प्राण लाज हमारी रितै गये । टोह ना मिलत कुछ चाहना हमारी श्याम, मोहिनी दिखाय रूप मोहन किते गये ।। २ ।।

बाजी बउरानी बाजी देखिबेको द्वार धाई बाजी अकुलानी सुनि बंशीधरकी । बाजी ना पहिरै चीर बाजी ना धरहिं धीर,

बाजिनके उठी पीर बिरह भँवरकी ॥ बाजी नाहिं बोलैं बाजी संग लागी डोलें, बाजी करत किलोलैं बाजी सुधि नाहिं घरकी॥ बाजी कहैं बाजी बाजी बाजी कहैं कहां बाजी, बाजी कहैं बन बाजी वंशी गिरधरकी ॥ ३ ॥

जाहि हाथ धनुष चढायो प्रभु सीतापति, जाहि हाथ रावण सवारि लंक जारी है। जाहि हाथ तारे औ उबारे हाथ हाथी गहि, जाहि हाथ सिंधु मथि लक्ष्मी निकारी है ॥ जाहि हाथ गिरिको उठाय गिरधारी भयो, जाहि हाथ नन्दकाज नाथ्यो नाग कारी है। मैं हूँ अनाथ हाथ जोरि कहौं दीनानाथ, वाही हाथ मेरो हाथ गहिबेकी बारी है ॥ ४ ॥

सवैया

आईहौं आज नई ब्रजमें, दधि बेचन जाहु तो जाने न पैहो। लेहुँ चुकाइ सबै दिनकी, रस खानि भरी मनमें पछितैहो। तेरी न चेरी न तेरे बबाकी, तू क्या मुझे घेरिके पेरि लडइहो। गोरस चाहो तो खाहु लला, जो पै वो रस चाहो जियत न पैहो ॥ १ ॥ कंसके राजमें दुन्दु नहीं, बरजोरे लला एक बुन्द न पैहो। खैंचत हौ गहिके अँचरा, चुनरी फटि है यशुदा लग जैहौ ॥ तोरत हार हजारनके पर, डण्ड लगे मनमें पछितैहो। जो इक मोतीको मोल करो, तब नंद जशोदा बिचेहू न पैहो ॥ २ ॥ ५ ॥

एक समै गृहसे निकसी, तनु सोहत चीर गुलाब किनारी। ताहि समै मनमें होइगै हम देखन गै नन्दलालकी वारी ॥ ताहिं कान्हा झुकान छुपान, धरी चट बांह गही मोरी सारी। शोर

करों सखि लाज मरों, विनती करिये नाहिं छोडयो मुरारी ॥३॥
काची कली एक तोरि लई, तेहि कारण बांह मरोरी हमारी।
टूटे रवा कँगनाके सखी, मुरके कर कोमल नाहिं विचारी॥
एकके खातिर दोय टूटे, तबहूँ चितमें नहिं नेह विचारी। आगि
लगै व्रजके बसिवे, एक फूलके कारन लाखन गारी ॥४॥६॥

सब देशनमें द्विज देवनमें, नर नारिनमें बहुत मोद प्रकाशै।
यश मात बढे नित मंगल होय, सदा तिनके सब दुःख विनाशै॥
सत भूषण वस्त्र सुभोग अनंद मिलै, बहु भांति सदा रिपु त्रासै।
नहिं पूरब पुण्य विना मिलिहै, यह मंगला मंगल देइ सुवासै ॥७॥

चित्त मलीन रहै नित ही, तनु व्याधि बढै ज्वर पित्त सहावै।
मोह कुसंग तृषा सूक रोग, दहै तनु दाह व्यथा दरसावै॥ बंधु
त्रिया स्वजना जनके, सुत स्वामि कुटुम्ब वियोग करावै। प्रेम
हुलास विनाश करै, यह पिंगला पाक दुसाह सहावै ॥ ८ ॥

धन धान्य सुमोद सुतव्रत है, यह धन्य दशा धन देय सहाई।
यश कीर्ति अपार सुभोग सदा, गजवाहन सौख्य सदा सरसाई॥
सुरभी गुण ज्ञान बढै मनमें, रिपु नाश करैं वन वायुकी नाई। नृप
मान करै सब कष्ट हरै, यह धन्य दशा विन पुण्य न पाई॥९॥

राजसभा सनमान बढे. गृह मंगल होय सदा सुखकारी।
बाणिज बुद्धि सुलाभ सदा, दुख दारिद दोष समूह प्रहारी॥
भद्रिका भौनमें भद्र करै, समान बढै रिपु प्रीति विचारी। मित्र
कुटुम्ब सुखी करिहैं, जिहिके यह भद्रिका पाक निहारी ॥१०॥

धन धान्य विनाश करै सिगरो, नृपते दुख सुकीरति नाशै।
सुत भृत्य कलत्र वियोग करै, नृपता घटि है दुखते तनु त्रासै॥

नयनोदर दंत बढै रुज कान, हृदय दुख दाह बढै मन काशै।
अरु दोष लगै परनारिनमें, उलका यह पाक कुबुद्धि प्रकाशै॥ ११॥

पाती जो आवत प्रेम पगी, सुख छाय रहै लखिकै मनमाहीं।
प्राण निछावर है मम तापर, और नहीं कछु मो ढिगमाहीं।
मूल सजीवन खाय जिये, वह देखि जिये जेहिकै जिव नाहीं।
एती कहौं तुमसों सजनी, तुम राखिये पीर हमारी सदाहीं॥ १२॥

क०-कमल उछाह जैसे सूरज प्रकाश होत, कुमुद उछाह जैसे चन्द्रमा परसते। भौंरन उछाह जैसे आगम वसन्त जानि, मोरन उछाह जैसे बरषा सरसते॥ हंसन उछाह जैसे मानसर बीच होत, साधुन उछाह इच्छा आवत अरसते। सबको उछाह यहि भांति कर होत अहै, अमरो उछाह प्यारी आपके दरशते॥ १३॥

हाथीके दांतनके खेलौना बनैं भाँति भाँति बाघनकी खाल तपी शिव मन भाई है। मृगनकी खालनको ओढत हैं योगी यती, छेरियोंकी खाल ढोल मढ़ि मन भाई है॥ साबरकी खालनको बांधत सिपाही लोग, गैंडनकी खाल राज राजन सोहाई। कहै कवि दयाराम रामके भजन बिनु, मानुषकी खाल कछु काम नाहिं आई है॥ १४॥

स०-लगे सावन मास विदेश पिया, मोरे अंगपै बूद परे सरसी। शठ कामने जोर करयौ सजनी, बँद टूट गये छतिया दरसी॥ पुनि कैकै श्रृंगार अटा जो चढी, मुख देखति हाथ लिये अरसी। पपिहा कह्यो पीउ रहो नहिं जीउ, गिरीगिरा खाई कबूतरसी॥ १५॥

छाये पिया परदेश सखी, अब जोबन जोर सतावत है।

ऐसे गये सुधहू न लई, विरहा दुख मो उपजावत है ॥ दुष्ट दई अब कैसी करौं, मोहिं नित्तहि क्यों तलफावत है । पंख नहीं उडि कैसे मिलौं, अब धीर नहीं जिय लावत है १६ ॥

क०-जोरि जोरि जो दृढ मोरि मोरि मोरि मुख चोरि चोरि चोरि चित्त चखन चित्तै गई । झुकि झुकि झाँकन झरोखा झाँकि झाँकि जात, ताकि ताकि तीछनमें ताप तन दगई ॥ सुमति प्रवीण मुख चंद्रसों उदोत होत, मृदु मुसक्यानमें चकोर चित्तकै गई । लुकि लुकि लोचन सँकोचनसों हेरि हेरि, लागिसी लगायके लपेटि मन लैगई ॥ १७ ॥

स०-ऐसी न देखी सुनि सजनी, घन बाधत है जो वियोग की बाधा । त्यों पदमाकर मोहनको, तबते कल है न कहूँ पल आधा ॥ लाल गुलाल घलाघलमों, दृग ठोकर दैगई रूप अगाधा । कैगई कैगइ चेटकसी, मन लैगई लैगई लैगई राधा ॥ १८ ॥

छांडि पतिव्रत प्रीत करी, निबही नहिं तौन सुनी हम सोऊ । मौन भयो हरि योंहीं परयो, सहनोई परयो जो कह्यो कछु कोऊ ॥ सांची भई कहनावति वा कवि, ठाकुर कान सुनी हुति जोऊ । माया मिली नहिं राम मिले, दुविधामें गये सजनी सुन दोऊ ॥ १९ ॥

जो करतार रची सो सही, विधि और विचार अकारथ ही है । वेद पुराण पुराणैं सुनी, सब कोऊ कहैं यह गाथ सही है ॥ अंतरा बीच परयो तो कहा भयो, मो मति तो तुव साथ रही है । जाय गुडी कितहूँ उडि डोर, उडावनहारके हाथ रही है ॥ २० ॥

नैनके बाण लगे जबते तबते कल है छनहूँ नहिं प्यारी ।

दास कहै नहिं चैन पडे, दिन रैन रहै जियबे इकरारी ॥ का तकसीर भई हमसों, जो विसारि दई सुधि हाय हमारी । लोग सबै यों कहैं सुनु प्यारी, कि बाजत है दोउ हाथन तारी ॥२१॥

पपिहा अरु मोर करैं अति शोर, उठी घनघोर है श्याम घटा । चमकै बिजली अति जोर भरी, अरु लागी झरी लिये ठाट ठटा ॥ तिन शोक भरी पछिताय खडी विरहागि जरी शिर खोलि लटा । सु कराहिके हाय करै पछिताय; कहै भगवान है सूनी अटा ॥ २२ ॥

अच्छीसी नारि अटा चढ़िकै; निज पीतमकी नित बाट निहारै । लै अरसी करमें सजनी; वह मोतिनकी शिर मांग सवारै ॥ जात मरी विरहानलमें; कह काहे न कन्त हमैं निरवारैं । "दास" न मानै पपीहा कह्यो करै, पीउ नहीं पिउ पीउ पुकारै ॥ २३ ॥

काहुने हाथ लियो करताल, बजावत श्याम खड़ी जो अगारी। काहुने झांझ मृदंग मँजीरन, और सितार बजावत हारी॥ काहू लिये करमें घुँघरूं, मुरचंग सुहात है कोईके तारी ॥ दास कहै कर जोरि सो होत, महा गुनिकै उर आनँद भारी ॥ २४ ॥

अथ भजन

दयानिधि तेरी गति लखि न परै ॥ धनसे धरम धरमसे अधरम अकरम करम करै ॥ पिता वचन टारे सो पापी, सोइ प्रहलाद करै ॥ ताकी बंदि छुडावनको प्रभु, नरसिंह रूप धरै ॥ १ ॥ एक गऊ जो देत विप्रको सो सुरलोक तरै । कोटि गऊ राजा नृग दीन्हे, सो भवकूप परै ॥ २ ॥ गुरु वसिष्ठ

अतिही गुण आगर, रुचि रुचि लग्न धरै ॥ सीता हरण मरण दशरथको विपतिमें विपति परै ॥ ३ ॥ वेद विदित जाको यश गावै, सो बलि यज्ञ करै ॥ ताको बांधि पताल पठायो, कैसेके सूर तरै ॥ ४ ॥ १ ॥

ठुमरी-सिन्धु

उठाय लीन्हों गिरिवर बायें कर हो ॥ इंद्र मम दहत रस्रो न व्रज चहत ॥ टेक ॥ इंद्र रिसाने व्रज घबडानो, आरत बचन पुकारो ॥ नंदजीको बारो, मातु गुण भारो, देखत घनकारो, सो बचायो व्रज हो ॥ १ ॥ व्रजहि बचायो इन्द्र सुन पायो, अति व्याकुल उठि धायो ॥ देखि छकि रहत, चरण गहि परत, सो जान्यो प्रभु आपु प्रगट भयो हो ॥ २ ॥ ग्वाल बाल लियो सुमन माल, सब लालनके गर डाल ॥ यशुदाके लाल, तुम करचो निहाल, कहैं मातादयाल, सो हमारो स्वामी हो ॥ ३ ॥ २ ॥

उठाया चाहैं चटक अवधवारो हो ॥ धनुष अति बिकट खडो है ताके निकट ॥ टेक ॥ अति सुकुमार कुमार सांवरो, कोटि मदन मदवारो ॥ क्रीटकर चटक, कमरकर लटक, भृकुटि टेढी मटक सियाको प्यारो हो ॥ १ ॥ भाल विशाल लाल उर सोहै, गल वैजन्ती माला ॥ कटि कसे फेंटों, कौशल्याजीको ढोटो, नयन दुख मेटो जनकपुर हो ॥ २ ॥ कुंडल लोल अमोल कानमें, लगत कपोलन आन ॥ अलककी झलक, परत नहिं पलक, उछल छटि छलक ललक उर हो ॥ ३ ॥ चितवन चारों ओर चांदसी, चोरनजित चख चारू ॥ मंदमुख हँसत, हियेमें हठि बसत, न काको रूप

धसत गजेन्द्रगामी हो ॥४॥ रघुकुलकमलपतंग बाँकुरो, क्षत्रिय कुल शिरमौर ॥ थिर न रहत, ये तोरन धनु चहत, कहत रघुराज हमारो स्वामी हो ॥ ५ ॥ ३ ॥

स०–शंकर शिव बंबंभोला ॥ कैलासपति महाराजराज ॥ टेक ॥ ओढे सिंहछाल गले व्यालमाल, लोचन विशाल सब लाल लाल, जाके चन्द भाल सुन्दर बिराज ॥ १ ॥ बस रहो तुरंग छबि कोटि अंग, लीन्हे गारि संग जाके शीश गंग, एक रंग ढंगमें करत काज ॥२॥ अतिरंग जस छाह धूप; निरखत स्वरूप भये चकित भूप कारि डिमिक डिमिक डिंडमरू बाज ॥ ३ ॥ कहैं दास दीन कर जोर जोर, दै भक्ति रखो प्रभु मन मोर अब चरण छोड मोहिं काह काज॥ शंकर शिव० ॥४॥४॥

संगीत–माई बजत बधाई आज रे ॥ आनँद तिलक गुरु मुनिन सहित; श्रीदशरथजी दरबार रे ॥ टेक ॥ तक धिलान धिथिकार धिन्ना धिकर तर, तुर कर तर धिन्ना ताता थूथू तननन घटत घटत मृगतान रे ॥१॥ सारी गम पधनी सा सारी गम रस तीन, तीती तनननन सात सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना गावत गुणी सुधार रे ॥ २ ॥ मंगल सजनी निछावर करत तिया मुखचुंबन अरु लेत बलैया, तुलसीदास भये सुभट प्रकट श्रीरामचन्द्र अवतार रे ॥ ३ ॥ ५ ॥

गजल–खलक यह रैनका सपना, समुझ मन कोई नहीं अपना ॥ चली है मोहकी धारा, बहा जात सब संसारा ॥टेक॥ घडा जैसे नीरका फूटा, पत्र जैसे डारका टूटा ॥ यही नर जान जिंदगानी, अबौ कर चेत अभिमानी ॥ १ ॥ भूल मति देख

तनु गोरा, जगतमें जीवन थोरा ।। सदा सत जानु यह देहा, लगा मन रामसे नेहा ॥२॥ सजन परिवार सुत दारा, सबै उस उस रोज हैं न्यारा ।। निकल जब प्राण जावेगा, कोई नहीं काम आवेगा ॥ ३ ॥ तजो मद लोभ चतुराई, रहो निःशंक जगमाहीं ॥ कटैं भ्रमजालका घेरा, कहैं गङ्गादास जन तेरा ॥ ४ ॥ ६ ॥

खेमटा–लालन बचन सँभारके बोलन ॥ टेक ॥ यमुनाके तीरे बन्सी बजावो, मानो लाल लिये मोहि मोलन॥१॥ पांच टकाकी कामरि ओढे, बातन बोले बडे बडे बोलन ॥२॥ लैहौं चुकाइ कसर सब दिलकी, जब तुम अइहो हमरे टोलन ॥३॥ श्रीरघुराज गुजारि मदमाती, बाहर भीतर करत कलोलन॥४॥७॥

आली सियाबर कैसा सलोना ॥टेक॥ साँवलि सूरति मोहनि मूरति, देखै कोई नहिं बाल दिठोना ॥ १ ॥ जनक नगरमें शोर मचो है, छूटें खान पान औ सोना ॥ २ ॥ कोटि मदन मूरति न्योछावर, कोई सखि कारि देइ न टोना ॥३॥ श्रीरघुराज मुकुटवारे पर, आखिर हमको फकीरी होना ॥ ४ ॥ ८ ॥

परज–लंगडी

पहुँचादे हमको कोई उन तक ॥ सब निकलि जात मेरे जियकी कसक ॥ टेक ॥ छाई कारी घटा चढि देखी अटा, जियमें मेरे होती सखि धक धक॥१॥ डगमगात तन थरथरात, बिजली रहि जावै चमक चमक॥२॥ तेरी कुँवरकन्हाई चतुराई सुनि आई, अब जानि परी मोहि तनक तनक ॥३॥ मथुरा वृंदावन याद परै, इन कानन सुनि बंसीकी भनक॥४॥ मैं तो

गरजी हूं दरश, हमको मत प्यारे अटक भटक ॥ ५ ॥ तजि लोकलाज मकसूद पिया अब खोल दिखावो सुरत चटक ॥६॥९॥

मलार-पूर्वी

रसके दिनन सखी कसकै करेजवा, मसकत चोलिया हमार रे ॥टेक॥ रैन अँधेरिया छाई बदरिया, अँगनामें परत फुहार रे॥ शोर चकोर करत चहुँ ओरी, मोरवा करत गोहार रे ॥१ ॥ बाढो प्रेम रूप रस सागर, सूझत बार न पार रे ॥ बिन पिया को मोहिं पार लगावै, नैया फँसी मझधार रे ॥२॥ कापै सजों सखी बरहौ अभूषण, कापर सोलहँ शृंगार रे ॥ सब सखियां मिलि अपने बालमसों, गावत राग मलार रे ॥ ३ ॥ १० ॥

बदरा उमडे बदरिया छाई, पापी पपीहा पीपी रटा ॥टेक॥ वर्षाऋतु तो आय गयो री, पिया बिन जियरा जात फटा ॥ कापे शृंगार करूं तू बता मोपे नेक न, वैरन भई है घटा ॥१॥ अंग विभूति ढूँढने निकली; शीश बढाय लई है जटा ॥ रसिया कारण भई वैरागन, योबन दिन दिन जात घटा ॥२॥ बदरा उमडे बदरिया छाई पापी पपीहा पीपी रटा ॥ ३ ॥ ११ ॥

बसन्त-रचो श्रीवृन्दावन रहस गोविन्द ॥ टेक ॥ चलो सखी देखन चलिये नवल अनन्द ॥ यमुनाके नीर तीर शीतल सुगंध ॥ १ ॥ सँजरी सरंगी बाजत तबला मृदंग ॥ बीन तो उपंग मुरली मोहरी चंग ॥ २ ॥ भालमें तिलक सोहै भृगमद रेख ॥ मुरली मनोहरको नटवर भेख ॥ ३ ॥ यह छबि देखैं ठाढे नारी नरेश ॥ ब्रह्मा अरु रुद्र आये गौरी गणेश ॥ ४ ॥

वृन्दावन बीच रच्यो रास विलास ॥ यह गुण गावै श्याम माधुरी दास ॥ ५ ॥ १२ ॥

भजन

श्रीभागवत सुनी जिन कानन ॥ जाकी महिमा कहत सुर नर मुनि, नारद शारद शिव चतुरानन ॥ टेक ॥ जिनको राम नाम प्रिय लागै, सीता राम बसैं उर आंगन ॥ ते यही लोक परम सुख पावें, अन्तकाल चढि जात विमानन ॥ १ ॥ धुँधुकारी एक प्रेत महाखल, तरेउ न पिण्ड गयाके दानन ॥ सप्त दिवस तिन सुना परायण, सुरपुर चलेउ बजाय निशानन ॥ २ ॥ श्रीहरिकथा सुगम सुखदायक, प्रिय नहिं लागै अधमके कानन॥ तुलसिदास पाछे पछितइहैं, जब अइहैं यमदूत भयावन॥ ३॥ १३॥

ठुमरी ललित

रामनामकी टेक परी सुधि श्यामसों लागि रही गुइयां ॥ टेक ॥ राजा दशरथके राम ये, जिन रावण मारो छिनमइयां ॥ १ ॥ वसुदेवहिं गृह जन्म लिये, नँदगांवमैं जाय दुहैं गइयां ॥ २ ॥ बिनु फर बाण ताडकै मारे, तारे अहल्या रज पइयां ॥ ३ ॥ व्रज ऊपर इंद्र कोप कियो, गोवर्धन धारे नख महियां ॥ ४ ॥ ऋषिके संघ जनकपुर जाके, धनुष उठाये लरकइयां ॥ ५ ॥ गणिका गिद्ध अजामिल तारे, शबरी तारे बनमहियां ॥ ६ ॥ तुलसी सूर आश चरणनके अधमको तारे धरि बहियां ॥ ७ ॥ १४ ॥

राम भजो सब काम तजो फिर ऐसा जन्म न पावोगे ॥ टेक ॥ ये सब हैं स्वारथके सङ्गी, बिगडे काम न आवेंगे

॥ १ ॥ बड़े भाग्य मानुषतनु पायो, विरथा जन्म गँवाओगे ॥ २ ॥ एक दिना श्रीकृष्णचन्द्र बिन, शिर धुनि धुनि पछिताओंगे ॥ ३ ॥ सूरश्याम प्रभु आश चरणके अन्त समय दुःख पावोगे ॥ ४ ॥ १५ ॥

कस मन मूढ राम बिसराये ॥ टेक ॥ गर्भवासमें भजन कबूले, बाहर आय अजान कहाये ॥ बिनु हरि भजन दशों दिशि भ्रमते, सपनेमें विश्राम न पाये ॥१॥ चारि पहर मायाके वशमें, काम बली तोहिं नाच नचाये ॥ परमारथ कबहूँ यहि कीन्हों, क्षुधा निवारन जिव बधि खाये ॥ २ ॥ सुत परिवार बहुत प्रिय लागे, इनहिं हेतु बहु द्रव्य कमाये ॥ अंतकाल यमदूत भयावन, समुझावन कोइ काम न आये ॥३॥ आठ प्रहर हम हम करि बीते, शीत बात पित कफ घिरि आये ॥ सुत बनिता धन देखिके भूले, यम देखत कस मन बिचुकाये ॥४॥ तीरथ किये न सेये सन्तपद, रघुपति गुणानुवाद न गाये ॥ तुलसी दास भगवान भजन बिन, जन्म अनेक प्रेत होय धाये ॥ ५ ॥ १६ ॥

मोहिंसम कौन कुटिल खल कामी ॥ तुमसे काह छिपी करुणामय, सब उर अन्तरयामी ॥ टेक ॥ भरि २ उदर विषयको धावत, जैसे सूकर ग्रामी ॥ जो तनु दियो ताहि बिसरावत, मोसों निमकहरामी ॥ १ ॥ जहँ सतसंग कथा तहँ आलस, विषयन संग विश्रामी ॥ श्रीपद छोडि सेव अवरनकी, निशिदिन करत गुलामी ॥ २ ॥ पापीपतित अधम परनिंदक,

सब पतितनमें नामी ॥ तुलसिदास कह धनि चरणनको, भजि ले श्रीपति स्वामी ॥ ३ ॥ १७ ॥

राखो पति गिरिवर गिरिधारी ॥ टेक ॥ अब तो नाथ रहै पति नाहीं, उघरत माथ यदुनाथ पुकारी ॥ विनय करों मैं राधावरसों, शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी ॥ १ ॥ बलविहीन पांडवसुत डोलैं, करते भीम गदा महि डारी ॥ रही न पैज प्रबल पारथकी, जबसे धरनि धरमसुत हारी ॥ २ ॥ भूप समाज वीर सब बैठे, भीषम द्रोण कर्ण व्रतधारी ॥ कहि न सकत कोउ बात परस्पर, इन पतितन मोरि अपति बिचारी ॥ ३ ॥ लाज गँवाय दास दासिनकी, पाछे आय काकरो गिरिधारी ॥ सूरश्याम प्रभु अधम उधारन फिर पछितैहौ देखि उघारी ॥ ४ ॥ १८ ॥

कब ढुरिहौ रघुनाथ हमारे ॥ टेक ॥ जैसे ढुरे प्रभु द्रुपदसुतापर खैंचत चीर दुशासन हारे ॥ १ ॥ जैसे ढुरे प्रह्लादभक्तपर, खम्भ-फारि हिरणाकुश मारे ॥ २ ॥ जैसे ढुरे सुग्रीव भक्तपर, अवगुण जानि वालि शर मारे ॥ ३ ॥ जैसे ढुरेहु विभीषण ऊपर, सेतु बांधि लंका पति मारे ॥ ४ ॥ तुलसिदास प्रभु आश चरणकी मोसम पतित अनेकन तारे ॥ ५ ॥ १९ ॥

पू०-लाज मोरी राखो गिरिधारी ॥ टेक ॥ गलियाँ गलियाँ फिरत सुदामा, क्षुधापीर है भारी ॥ मरजी भई रघुनन्दनजीकी; उठि गई कनक अटारी ॥ १ ॥ मध्य सभामें बैठि द्रोपदी, त्राहि त्राहिकै पुकारी ॥ खैंचत भुजबल थाके, बाढे पीताम्बर भारी ॥ २ ॥ भारतमें भरुहोके अंडा, पक्षी जाय पुकारी ॥ तापर डारि दियो गजघंटा, काट्यो संकट भारी ॥ ३ ॥ नहिं विद्या नहिं

बाहुको बल है, नाहिं भजन अधिकारी राम गुलाम राम किरपाकर निशिदिन आश तिहारी ॥ ४ ॥ २० ॥

ठुमरी

रघुनन्दनसे विनती इतनी, दुखद्वंद्व हमारो निवारो जू ॥ टेक ॥ अपने पदपंकज पींजरमें, एक हंस हमें बैठारो जू ॥ ॥१॥ एक मोहन श्याम जो आइ गयो, भवसागर पार उतारो जू ॥२॥ जिन रामभजनमें भंग कियो, तिनको यमफंदमें डारो जू ॥३॥ तुलसी जो करै हरिसे बिनती, परलोक हमारे सुधारो जू ॥ ४ ॥ २१ ॥

जिनके हियमें सिया राम बसैं, उन और के नाम लियो न लियो ॥ टेक ॥ जिनके घट गंग प्रवाह बहै तिन कूपको नीर पियो न पियो ॥ १ ॥ जिन सतपरमारथ जानि लियो, उन हाथसों दान दियो न दियो ॥ २ ॥ तुलसी जो करै हरिसे बिनती, एक मूरख मित्र कियो न कियो ॥ ३ ॥ २२ ॥

कबकी खडी यमुनाके घाट, मोरी पार लगा दे नावरिया ॥ टेक ॥ गुणी गुणी सब पार उतरि गये, मैं निर्गुण भई बावरिया ॥ १ ॥ बहै पुरवैया पवन झकोरै, बही जात मोरी नावरिया ॥ २ ॥ जो हौं महादेव पार लगैहौ, तुमको चढाउब कांवरिया ॥३॥ सूरदास बलि आश चरणकी, मन हरि लेगयो सांवरिया ॥ ४ ॥ २३ ॥

रेखता

हे गोविन्द राखु शरण अब तो जीवहारे ॥ टेक ॥ नीर पियन हेतु गये, सिन्धुके किनारे ॥ लपटि झपटि ग्राह गहे,

लेइ गये मँझधारे ॥ १ ॥ चार प्रहर युद्ध कीन्हों, गजको पछारे ॥ नाक कान डूबन लागे, नाथको पुकारे ॥ २ ॥ नाथ कान शब्द गई गरुड पीठ धाये ॥ ग्राहको तो वधन कै, गजराजकूँ उबारे ॥ ३ ॥ सूरके तो यही आश, शरणको तिहारे ॥ गोकुलमें जन्म लीन्हों, नन्दके दुलारे ॥ ४ ॥ २४ ॥

सोरठा–असमय मीत काको कवन ॥ टेक ॥ कमलको रवि परमहित है, कहत श्रुति अस बयन ॥ घटत वारि विचारि दुर, दिन, करत कमलहि दहन ॥ १ ॥ रहत मधुमें लीन मधुकर, प्रेम दे चित चयन ॥ निरस जानि विचारि इतउत, करत तुरतहि गवन ॥२॥ कीन्ह व्याधै घात मृग पर, जात कानन भवन ॥ अङ्ग शोणित भयो वैरी, खोजि दीन्ह्यो तवन ॥ ३ ॥ समय असमय जानियो मन, खोलि देखो नयन ॥ सूर कहत कहाय सबके, रटहु राधारमन ॥ ४ ॥ २५ ॥

अरे मन रामसे करुप्रीत ॥ टेक ॥ श्रवन गोविन्द गुण सुनाकर गाव रसना गीत ॥ १ ॥ एक दिन तोहि काल खइहै, समुझि देखहु चीत ॥ २ ॥ व्यालरूपी काल डोलत, मुख पसारे मीत ॥ ३ ॥ साधु संगति बैठते मन होत, परम पुनीत ॥४॥ कहत नानकराम भज रे, जात अवसर बीत ॥ ५ ॥ २६ ॥

पू०-मोरंग देशवा कैसेनवाँ ॥ टेक ॥ यहि पार मो रंग वाहिपार तिरहुत, परी बालू रेतिया है बिचवाँ ॥१॥ वहि बालू रेतियामें पिया लैके सूतल्यूँ डँसे बाला जियरा हो नगवां॥२॥ नगवाके डँसले हम नाहीं मरबै, मुअल्यूमें सैयांके वियोगवां

॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो, कर्म लिखनियांको योगवां ॥ ४ ॥ २७ ॥

सुंदर बानी है शरीर, तनिक नाहिं बिगरी, ये माधो ॥ कौन शखस ऐसो आयो, कौन लैके निकलो ये माधो ॥ टेक॥ आठ काठको बिनो है पिंजरा, नव दरवाजे ये माधो ॥ निकलि गये पक्षी प्राण, चुगन लागे कागा ये माधो ॥ १ ॥ लाय दियो मुहँ आग काठ बहु भरा ये माधो ॥ सुतली है कर बांस, शीश गहि मारा ये माधो ॥ २ ॥ जो बैरी कर मूल ताहि हित जान ये माधो ॥ पलटूदास गुरु ज्ञान, समुझि अलगाना ये माधो ॥ ३ ॥ २८ ॥

खेमटा

करो मन वा दिनकी तदबीर ॥ टेक ॥ नदियां एक बहै भवसागर, मन नहिं धारत धीर ॥ नाव न बेरा लोग घनेरा, खेवनवाला बखीर ॥ १ ॥ जब यमदूत पलँग चढि बैठें, होन लगी तकसीर ॥ मुद्गर मारिके प्राण निकालत, नैनोंसे बहि चले नीर ॥२॥ बांधि खंभ ले देत ताडना, बेकल होत शरीर ॥ कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब न करब तकसीर ॥ ३ ॥ २९ ॥

तुम बिन नाथ कुञ्जवन भटकी ॥ टेक ॥ मैं यमुन जल भरन जात थी, शिर गागर मेरी गिरिधर पटकी ॥१॥ दधि-बेचन चलि जात वृन्दावन, धै बहियां मेरी गिरिधर झटकी ॥ २ ॥ वह दिनकी सुधि भूले मोहन, जा दिन मालस बेसर अटकी ॥ ३ ॥ चन्द्रसखी छबि देखि मगन भई, सांवली सूरत पर जिय अटकी ॥ ४ ॥ ३० ॥

दादरा-तिताला

जय नारायण ब्रह्मपरायण, श्रीपति कमलाकंतं ॥ टेक ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सुरमुनि ध्यान धरंतं ॥ नाव अनंत कहां लगि वरणों शेश न पावत अंतं ॥१॥ मच्छ कच्छ सूकर नरहरि प्रभु, वामनरूप धरंतं ॥ परशुराम एक रामचन्द्र छबि, लीला कोटि करंतं ॥२॥ होय बलभद्र दैत्य संहारे, कंश के केश गहंतं ॥ पैठ पाताल कालीनाग नाथके फणपर नृत्य करंतं ॥ ३ ॥ तीन लोककी पूजा खायो सुरपुर जाय छपंतं ॥ जगन्नाथ जगमग चिन्तामणि बैठिरह्यो निश्चिंतं ॥४॥ कलियुगमें ये होहिं कलंकी, नाम परो गुणवंतं ॥ दशमस्कन्ध भागवत गीता सुरशरण भगवंतं ॥ ५ ॥ ३१ ॥

ठुमरी

रोकत श्याम मैं कैसे पाऊं पानियां ॥ टेक ॥ शीश मुकुट कंचनको झलकत, मकर मनोहर कुण्डल हलकत चन्दन खौरि माथमें राजित, उर बैजन्ती माल विराजत। पीतांबर कटि काछे कछनियां ॥१॥ कटि किंकिणियां नूपुरवारी, झुनझुनात मुनिजन मनहारी। मगु पैजनियां डोलत बाजे, देखत दुरित दूसरे भाजें। अति चंचल अलबेली चितवनियां ॥२॥ अधर-सुधारस वेणु बजावे, ग्वाल वाल संगहि लेइ धावै। कहा न मानै नन्दमहरकी, माखन खात फिरत घरघरको ॥ बरजै मोहनको नाहीं नँदरियां ॥३॥ गागर फोर मोर मन हरकै, उरमें भुजमें करमें करकै ॥ विवश हमैं करि नागर नटकै, भागि चलै कुंजन बन सटकै ॥ ऐसो निडर हठि परी है कुबनियां ॥ ४ ॥ ब्रह्मा-

दिक सुर ध्यान लगावैं, शेष सहस जेहि पार न पावैं ॥ वृन्दा-बनमें रास रचे हैं, मोहन सखियन शोर मचे हैं ॥ धावत सूर रसिक हरिदनियां ॥ ५ ॥ ३२ ॥

बिहाग

मेरे मन इतनी शूल रही ॥ वे बतियां छतियां लिखि राखी, जे नँदलाल कही ॥ टेक ॥ एक दिवस मेरे घर आये, मैं दधि मथत रही ॥ रति मांगत मैं मान कियो सखि, सो हरि टेक गही ॥ १ ॥ शोचति अति पिछताति राधिका, मूर्छित धरणि ढही ॥ सूरदास प्रभुके बिछुरेते, व्यथा न जात सही ॥ २ ॥ ३३ ॥

कहै कोई परदेशीकी बात ॥ टेक ॥ वे द्रुमलता वही कुञ्जनवन, वे तरुवरे वे पात ॥ जबसे बिछुरो नन्दसांवरो नहिं कोइ आवत जात ॥ १ ॥ मंदिर अर्ध अवधि हरि बदि गये, हरि अहार टरि जात ॥ अजया भख अनुसारत नाहीं, कैसेक दिवस सिरात ॥ २ ॥ शशिरिपु वर्ष भानुरिपु युगसम, हरिरिपु कीन्हें घात ॥ वेद नखत ग्रह जोरि अर्ध करि, सोई बनत अब खात ॥ ३ ॥ मघपंचम लै गयो सांवरो, ताते जिव अकुलात ॥ सूर श्याम बिन विकल विरहिनी, कर मींजत पछितात ॥ ४ ॥ ३४ ॥

ठुमरी

श्यामका सँदेशा ऊधो पाती लिखि आई रे ॥ टेक ॥ पाती तो अनेक आई बाँची नहिं जाई रे ॥ घूँघटके ओट पाती छातीसे लगाई रे ॥ १ ॥ गोकुल उजारि दीन्ही मथुरा बसाई रे ॥ कुबरीको रानी कीन्हीं हमैं बिसराई रे ॥ २ ॥ योग

जुगतिको सँदेश पठाई रे ॥ जियत खसम हमैं भसम रमाई रे ॥ ३ ॥ सूरश्याम प्रभु आश चरणके, निशि दिन ध्यान रहत लवलाई रे ॥ ४ ॥ ३५ ॥

हमारी गली बरसत श्याम आवे रे ॥टेक॥ मैं यमुना जल भरन जात जब बरबश श्याम मोरी गेंडुरी बहावै रे ॥ १ ॥ दधि बेचन मैं जात वृन्दावन, बरबश श्याम मोसे झगरा मचावै रे ॥२॥ सूर श्याम बरजो नहिं मानत, भरली गगरिया मोरी श्याम ढरकावै रे ॥ ३ ॥ ३६ ॥

ठुमरी ललित

निर्दई श्यामने फोड दई पनिघट पर मोरी गगरिया ॥ जब नीर भरन घरसे निकसी एक एक काग बोलि गयो मागरिया ॥टेक॥ दहिने दहिजार बिलार गयो बायें कर छींकत छागरिया॥ मोरे सँगकी सखी सब दूर गईं, सब गुणकी पूरी आगरिया ॥१॥ मोहिं जानि अकेली छेकि लियो, शिर बांधे टेढी पागरिया॥ मोरी अरजगरज एकौ नहिं मानत, बसत कौनधौं नागरिया मन उठत क्रोध तनु थरथरात पग, परत सूध नहिं डागरिया ॥ सूर श्याम सुन्दर मनमोहन, ओढे काली कामरिया ॥३॥३७॥

पूर्वी

मोरी राधेने बँसिया चुराई अब नहिं जियबै रे माई॥टेक॥ खेलत रह्यों कदमकी छहियां सब सखियन बिलम्हाई ॥ बाँह पकरि मोरि मुरली छीन ली, कान्हा रोवत घर जाई ॥१॥ ले कनियाँ समुझावै यशोमति, बारबार उर लाई ॥ बाँसकी बंशी जान दे मोहन, सोनेकी देउँ गढाई ॥ २ ॥ सुरपुरते बंशी यह

आई, बाबा नँद मँगाई।। सो बंशी मोरे प्राण बसति है, कैसेके जात बनाई ॥३॥ इतनी सुनिकै ग्वालि छकित भइ, कृष्णको कंठ लगाई!। सूर श्याम बलि जात यशोमति, कान्हको अन्त न पाई ॥ ४ ॥ ३८ ॥

गौरी

हमारे प्रभु अवगुण चित्त न धरो ।। समदरशी है नाम तिहारे, सोई पार करो ॥ टेक॥ एक नदिया एक नार कहावै, मैलो नीर भरो ॥ जब मिलिगो तब एक वरण भो, गंगा नाम परो ॥ १ ॥ इक लोहा पूजामें राखत, इक घर बधिक परो ॥ सो दुविधा पारस नहिं राखत, कंचन करत खरो ॥ २ ॥ इक माया इक ब्रह्म कहावत, सूर श्याम झगरो ॥ कै याको निरवाह करो प्रभु, नहिं प्रण जात टरो ॥ ३ ॥ ३९ ॥

इनमें कौन राधिका रानी ।। हँस रुक्मिणी बूझत सखियनसे, गूढ़ वचन मृदु बानी ॥ टेक॥ नीलाम्बर जाके तनु सोहै, मुखपर लट लपटानी ।। सो कहियत वृषभानुनन्दनी, मधुर मन्द मुसक्यानी ॥ १ ॥ रसके वश कीन्हे मनमोहन, सुनियत चतुर सयानी।। दर्शन विन तरसैं दोउ नैना, ज्यों मछरी विन पानी ॥२॥ शिव ब्रह्मा जाको ध्यान धरत हैं, सो राधा महारानी ॥ सूरदास सन्तनके कारज, गिरिधर हाथ बिकानी ॥३॥४०॥

मधुवन तुम कैसे रहत हरे॥ टेक॥ तुम्हरे हरि बंशी बजाये, शाखा टेकि खरे ।। अधम निलज्ज लाज नहिं तुमको, फूलत फेरि फरे ॥ १ ॥ हमरी आश तनिक कायाकी, जब तब होत खरे॥ तुम न मरी वृषभानु नंदिनी, भेंटत अंक भरे ॥२॥ जैसे

जल बिन मीन दुखित हैं, जलहुके मीन मरे।। कुन्जन फिरति राधिका, नैनन नीर भरे ॥ ३ ॥ जो आवै सोइ मंगल गावै, सुनि सुनि हाल हरे।। सूर श्याम प्रभु तुमरे दरशको, ब्रजवासी बिसरे ।। ४ ।। ४१ ।।

सबनमें राजत एक जनी ॥ टेक ॥ बिहरत सकल फिरत वृन्दाबन, सखियन मध्य रमनी ।। ता याको सुत ता सुतको सुत, ता सुत भखु वदनी ॥१॥ तमरिपुसुत भ्राता पितु वाहन, ता अरिकिट जु बनी ।। शैलसुतापति ताको भूषण, ता वाहन नैनी ॥२॥ दाड़िमदशन अधर बिम्बाफल, मृदु कोकिल बैनी ॥ मीनसुता सुत तासुत नासा, तापर जलजमनी ।। ३ ।। लटकन बेसरकी द्युति राजत, झलकत कोटि कनी ।। बेणी छूटि परी अँग ऊपर, उषमा सब पैनी ॥४॥ कंचन खंभसी मानो गोरी, नाचत जडत फनी ।। सूरदास यह देखि महाछबि, बाढत प्रीति घनी ।। ५ ।। ४२ ।।

आंजु हम देखा गिरधारी ॥ माथे मुकुट गले बैजंती चितवन अतिप्यारी ।। टेक ॥ अलबेली पाग शिर सोहै, गले बनमाल जग मोहै ।। पीतांबरकी कछनी काछे ।। बांये करमें लिये मुरलिया, गौवनके पाछे ॥ यमुनाजल भरने मैं जाती, कोई मोर संगी नाहिं साथी ।। चकित चित नाथको चीन्हा ॥ श्यामसरोज बिलोकि सखी मोहिं, तन मन सब हरलीन्हा ॥ ललिताकी सुनिये याहि बातें राधिका दरशन लागे ॥ सखी सब प्रभुको पहिचाने॥ सूरश्याम यह शोभा लखिकै, हिरदयमें हरषाने॥४३॥

१ इसमें किसी पदका नियम नहीं है, केवल टेकमात्र पूर्वी सदृश है ग्रन्थकर्तानि कदाचित् नवीन रागकी रचना की हो इस लिये संशोधकने यथावत रख दिया है।

ठुमरीललित

चलहु सखी भरिनयन देखिये प्यारी छबि रघुनन्दनकी ॥ श्यामसुंदरकी सूरति निरखि सखि, रही न सुधि कछु तन मनकी ॥ टेक ॥ अलबेली शिर पाग सुरंगी, कलँगी लगी हीरा मोतिनकी ॥ भाल तिलक केशरकी रचना, कुण्डल झलकन काननकी ॥१॥ बाँकी भौंह नयन रतनारे, नासा बीच मोती तनकी ॥ सखि मेरो जियरा वश कीन्हो, चमकन अधर कपोलनकी ॥ २ ॥ रत्नसिंहासन दोउ सजि बैठें, जनकलली दशरथवारे ॥ काम कोटि छबिनिरखत मोहैं, तुलसिदास जिनके तनकी ॥ ३ ॥ ४४ ॥

दादरा

कैसा बना बीर बांका रे सजनी ॥ टेक ॥ माथे मणि मुकुट जराऊ हीरा, लाल लागे कैसा मजाका रे सजनी ॥ १ ॥ शोभित रामललाम जनकपुर देखो छबि लषणलाल कारे सजनी ॥ २ ॥ जनकपुरीमें शोर मचो है, करत जगत बिच शाका रे सजनी ॥३॥ मधु अली घर जाऊँ मैं कैसे, परत डगर बिच डाका रे सजनी ॥४॥ तुलसिदास प्रभु मन हरि लीन्हों, कैसे लगत चौक जाका रे सजनी ॥ ५ ॥ ४५ ॥

दादरा बिहाग

मुरली धुनि जाल, कैसी यशुमति सुत करि गयो ॥ टेक ॥ मुरली अधर पर धैके, गावत सुरताल ॥ १ ॥ चित्तचोर वह नंदवारो, करत बिहाल ॥ २ ॥ धाओ धरो सखिया री, पहि-

राओ जय माल ॥ ३ ॥ मिलि हैं सूर प्रभु जबहीं आनंद उर शाल ॥ ४ ॥ ४६ ॥

गजल

विना रघुनाथके देखे, नहिं दिलको करारी है ॥ हमारी मातुकी करणी सकल दुनियासे न्यारी है ॥ टेक ॥ रामसे जो बिमुख कीन्हा, वही जननी हमारी है ॥ परे धरणी भरत लोटे, नयनसे नीर जारी है ॥१॥ रोवैं शिर धुन हाय करिके कठिन करता बिगारी है ॥ गुरु उपदेशको करता, करो तुम राज भारी है ॥ २ ॥ अवधमे बन गये रघुनाथ ज्यौं बरछीसे मारी है॥ चलो रघुनाथकी शरण, यही तुलसी विचारी है॥३॥४७॥

बारहमासा

ऊधो भोरवै मधुपुर जाहु कन्हैयाको लै आवहु ॥ टेक ॥ शीतल चंदन अंग लगावैं कामिन करै शृङ्गार ॥इहां महिनवां बीतत ऊधो, सुखकर मास अषाढ ॥१॥ एक तो ऊधो बारी बैसवा, दुसरे पिया परदेश ॥ तिसरे मेघ झड़ाझडि लाये, सावन अधिक अँदेश ॥२॥ भादौ निशि अँधिरिया ऊधो, गरजै औ घहराय ॥ बिजुली तडपै हियरा लरजै; केकरी सरनीयां जाय ॥३॥ क्वार कुशल नहिं पावों ऊधो, कासे कहहुँ सँदेश ॥ मैं बिरहकी मारी, पिया छाये परदेश ॥ ४ ॥ कातिक पूरणमासी ऊधो, सब सखि गंग नहायँ ॥ हम असि अबला परम सुन्दरी, केकरे गोहनवां जायँ ॥५॥ अगहन मोर कुहूके ऊधो, बालम कठिन कठोर ॥ अबकी बार पियऊ नहिं ऐहैं जिवत न पैहैं

जिय मोर ॥ ६ ॥ पुसवै कुहवा परिगा ऊधो, भीगै अंगकी चीर॥ यमुना किनारे कान्ह वसिया बजावैं, नैनन बहै जलनीर ॥ ७ ॥ माघ मास ऋतु दारुण ऊधो, को लै मारै तुषार ॥ केतनौ रुइया भरैबो उधो, बिन पिय जाड न जाय ॥ ८ ॥ फागुन फगुआ खेलत्यूँ ऊधो, रखत्यूँ मैं हियरा लगाय ॥ हमरे बालुमआ जो घर होते, रखत्यूँमैं रंगमें रँगाय ॥ ९ ॥ चैतमास बन टेसू फूले, चम्पा लाल गुलाल ॥ पशु पक्षी सब केलि करत है, दुख सहो नहिं जाय ॥१०॥ वैशाखै बसवा कटवौत्यूँ, रचि रचि मंदिर छवाय ॥ चौमुख दियना जरौत्यूँ, ऊधो, अँचरन करत्यूँ बयार ॥११॥ जेठ मास बरसाइत ऊधो बट पूजै सब कोय ॥ सूरदास बलि जाय चरणको, उहवां मिलै हरि मोय ॥ १२ ॥ ४८ ॥

श्यामसुन्दर ब्रजराज न आये, वर्षाऋतु बीत गई ॥ जेठ तपत दिन रैन आषाढमें, गरजि घुमरी बरसे ॥ टेक ॥ सावन गडे हिंडोल कृष्ण, कुवरि सँग झूलि रहे ॥ भादौं बरसत मेघ क्वाँर बन, मोरवा कुहुकि रहे ॥ श्यामसुन्दर ब्रजराज न आये ॥ १ ॥ अगहन अगम अन्देश, पूषमें बरत रहूं हरिके ॥ माघै मकर नहाय कृष्णकी, पाती हिं पाई ॥ श्यामसुन्दर ब्रजराज न आये० ॥ २ ॥ फागुन उडत गुलाल, चैत बन टेसू फूलि रहे ॥ सूर श्याममोहन वैशाखैं, बहियां आय गहीं ॥ श्यामसुन्दर ब्रजराज न आये, वर्षाऋतु बीत गई ॥ ३ ॥ ४९ ॥

वृंदावन बिरहिन तरसै महाराज द्वारिका छाये ॥ टेक ॥

सावनकी ऋतु आई सखियां हिंडोला झूलैं ।। पहिरे कुसुमरंग सारी विरहा अगिनि तनु जारी ॥१॥ भादौं गगन घन गरजै, चहुँ ओरसे दामिनि दमकै ।। सूनी सेज डर लागे, मुरली मधुर नहिं बाजै ॥२॥ क्वारै शरदऋतु आई, हमरे हिय बिच शूलै॥ देखा चहौं नन्दलाल, यशुदाके मदन गोपाला ।।३।। कातिक कान्हा ना आये, जिनके मधुपुर छाये ।। उनको न ऐसी चहिये, व्रज छोडिके अन्तौ रहिये ॥४॥ अगहनकर वादा करि गये, झूँठेका दिलाशा दे गये ।। मन तो हमारा लै गये, जियरा वियोगी करि गये ॥५॥ पूषै लिखी हरि पाती, सुनिकै दरकि गई छाती ।। गले रुंडकी माला सुनिकै, योग जिय हाला गुनिकै ॥ ६ ॥ माघै जो मनको मारै, इंद्रिय भसम करि डारै ।। जो इसका ताना तानै, सोई योगगति जानै ॥७॥ फागुनकर यह फल पावा, जो किया सो आगे आवा ।। कुबरीसवति बेलम्हावा, हमको लिखा बदावा ॥ ८ ॥ चैतै चारु चमेली, चंपा फूले वन बेली ।। बिन मीनके पल्लव बाढे, अजहूं न आयो बाढे ॥९॥ बैशाखैं विरहिनी बौरीआदे पिय बिन तौगी ।। सुधि श्याम-सुन्दरकी आई, सेजिया नींद नहिं आई ॥ १० ॥ जेठैं जरौं जवानी, जेकै लगै सो जानी ।। रोवै राधिका रानी, यशुदाके सुत हम जानी ॥ ११ ॥ आषाढ़ै आशा तजिकै, निःकेवल हरिपद भजिकै ।। एक दम हरिहर मेरे, गावै सूरदास पद टेरे ॥१२॥ वृन्दावन विरहिन तरसै, महाराज द्वारका छाये ॥ १३ ॥ ५० ॥

टेक पूर्वी

चित दे सुनिये मोरे महाराज, पृथवी काहूकी न भई ॥टेक॥

अपने सुतके मूड मुँडावैं, छूरा लगन न पावै ॥ आनके सुतके मूंड कटावै, तनिक दरद नाहिं आवै ॥ १ ॥ लैके तेगा चला सिपाही, अजयाके शिर काटा ॥ मुंड काटि भुइयां धरि दीना, मूंडन कुकर लै चाटा ॥ २ ॥ अपनी भवानीको भेडा चढावैं, पीरनको नेवनेजा ॥ जन्म दियो उनको कुछ नाहीं, बँहियां पकडि जिन भेजा ॥ ३ ॥ रहेनि ऐकसे भयनि सहससे, चिश्वा सात महतारी ॥ कहै कबीर ये कैसे तारिहैं, सहस पुरुषकी नारी ॥ ४ ॥ ५१ ॥

टेक भैरव

गुरु मैं तो भूलो मोहि डगर बताये जा ॥ टेक ॥ हाट बाट मैं झउवा देखेउँ, पक्षिनमें एक कौवा ॥ मानुषमें एक नउवा देख्यो, नउवा कउवा झौवा, मोहिं छनमें मिलाये जा ॥ १ ॥ ब्राह्मणके घर रांडी देख्यो कोहराके घर हाँडी ॥ जोलहाके घर माँडी देख्यों, राँडी हाँडी माँडी, मोहि छनमें मिलाये जा ॥ २ ॥ राजाके घर हाथी देख्यों लोहराके घर भाथी ॥ कोहराके वर थापी देख्यों, हाथी भाथी थापी, मोहि छनमें मिलाये जा ॥ ३ ॥ डोमवाके घर दउरी देख्यों, कँहराके घर सउरी ॥ भुँजवाके घर बहुरी देख्यों, दउरी सउरी बहुरी, मोहि छन० ॥ ४ ॥ फूलनमें एक बेला देख्यों तेलीके घर तेला ॥ कबिराके घर चेला देख्यों, बेला तेला चेला, मोहिं छनमें मिलाये जा ॥ गुरु मैं तो भूलो मोहिं डगर बताये जा ॥ ५ ॥ ५२ ॥

बिलाबल

तीरथराज प्रयाग निकाई, बदत व्यास मुनिवर अहराई ॥ टेक ॥ रवितनया सादर सुरसरिता, संग वहत अतिशय छबि

छाई।। श्याम अरुण उज्ज्वल बर बारी ब्रह्म समान महासुखदाई ॥१॥ मकर मास अथवा कोई दिनमें, मध्य त्रिवेणी जो जाय नहाई ।। तीनौ मिलके करत तेहि पावन, कलुष सकल वाके देत बहाई ॥२॥ वेणीमाधो रमत दयायुत, ब्रह्मा यज्ञ करी मन लाई ।। अक्षय वट त्रिशूल टंकेश्वर, आसीन हैं अशरणके सहाई ॥ ३ ॥ वेद पुराण सिद्ध सुर नर मुनि, तीनोंसे अधिक न ठहरा कोई ।। सो त्रिदेव तहँ बसत निरंतर, को कहि सकै वाकी सुयश बड़ाई ॥ ४ ॥ संत समाज नाना तपसी मुनि, कल्पवास करहीं तहँ जाई ।। हरिप्रसाद सोई धन्य जीव जग, जो ध्यावहिं जगजाल उठाई ॥ ५ ॥ ५३ ॥

चित्रकूट वन परम सुहावन राम सिया लछमन मन भावन ॥टेक॥ जहाँ भरत रिपुहन मिथिलेश्वर, युत समाज प्रभु आय मनावन ।। आयसु मानि कूप जल रखिकै, बहुरे चरणपीठ लै पावन ॥१॥ कामदगिरि लछमन गिरि सुन्दर, विरिजा ब्रह्मकुण्ड शुभ ठावन ।। मंदाकिनि गायत्रि पयश्विनि, राघो रामघाट अघदावन ॥ २ ॥ तीरथ कोटि देव अपना भलि, हनुमत धार सुसरित लजावन।। अनसुइया तप भूमि बिराजे, गुप्त गोदावरि पाप दहावन॥३॥ एकसे एक सरस मंदिर वन, मुनिनायकको मन अरुझावन।। हरिप्रसादको सब मिल दीजै, सुखसमाज युत मुनिजन आवन ॥ ४ ॥ चित्रकूट वन परम सुहावन, राम सिया लछिमन मन भावन ॥ ५ ॥ ५४ ॥

दादरा-कौवाली

जब जैहौ कचहरीमें जानि परी ॥ टेक ॥ जा दिनसे तुम

आयउ बन्दे, आंतीसे पोटी नरक भरी ॥ संकटमें तुम फिर टेरेउ, भगवंत शरण तुम्हरी ॥ १ ॥ कुछ दिन गोद हिंडोला झूलेउ, लडिकनके सँग केलि करी ॥ युवतिनकै सँग बदन विलोकेउ, मानो मनोहर वेलि हरी ॥ २ ॥ रंगमहलसे तुरत निकाले, सनम पील पालकी चढी ॥ चोपदार दो आगे पीछे, तिरिन काठ पर दिहियां धरी ॥ ३ ॥ नरक घोरमें त्रास देखावत हिरदैमें बाकी निकली ॥ ये सब यमके द्वारे खडे हैं हाजिर जामिन कोइ न करी ॥ ४ ॥ पंथ कठोर घसीटत, पीटत, मुद्गर गले फांसी परी ॥ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, अब का झंखहु वाट परी ॥ ५ ॥ ५५ ॥

गौरी

करमगति टारेहु नाहिं टरै ॥ कहां बसै राहु कहां बसै रवि शशि, आनिसंयोग परै ॥ टेक ॥ गुरु वसिष्ठ पंडित अति ज्ञानी रचि रचि लग्न धरै ॥ पिता मरण अरुहरण सिया को, वनमें विपति परै ॥ १ ॥ भारतमें भरुहीको अंडा, घण्टा टूटि परै ॥ हरिश्चन्द्र सो दानी राजा नीचको पानी भरै ॥ २ ॥ तीन लोक भावीके वशमें सुर नर देह धरै ॥ सूरदास होनी सो ह्वैहै, काहेको शोच करै ॥ ३ ॥ ५६ ॥

श्रीगंगा जग तारनको आई भूप भगीरथने तप कीन्हों, शिव ले शीस चढाई ॥ टेक ॥ पापी दुष्ट अजामिल गणिका, पतित परमगति पाई ॥ परम पुनीत प्रीति ब्रह्मादिक, वेदव्यास मिल गाई ॥ १ ॥ नाम लेत सब ध्यान धरत हैं, तारत वार न लाई ॥ विप्र गदाधर भरद्वाजकुल, केवल गंग सहाई ॥ २ ॥ ५७ ॥

भैरो

कृष्ण कृपालु कृपानिधि केशव, दीनबन्धु दयाल ॥ टेक ॥ दामोदर वनवारी मोहन, गोपीनाथ गोपाल ॥ १ ॥ राधारमण विहारी नटवर, सुन्दर यशुमतिवाल ॥ मुरलीधर गिरधर मन-हारी, सुखकारी नँदलाल ॥ २ ॥ गोचारण गोविंद गोयपति, भावन मंजुल ग्वाल ॥ क्षितिस्वामी सोइ अब प्रगटेंगे, कलिमें बल्लभ लाल ॥ ३ ॥ ५८ ॥

भैरवी

डँसो हमैं श्याम भुजंग कारे ॥ रोम रोम विष छाय गया है, चित्तवत श्वास डारे ॥ बेगि बुलावौ गरुड़ि गोपालै, जो यह विषको डारे ॥१॥ यन्त्री करत मन्त्र नहिं लागत, करि उपाय सब हारे ॥ विन व्रजराज पीरको जानै, जो यह दुसह निवारे ॥२॥ कहा कहौं कछु वश नहिं मेरो, वैद्य गुणी सब हारे॥३॥ भली करी ऊधो तुम आये, बुद्धि दै चले हमारे ॥ सूरदास गिरिधर कब ऐहैं, ऐहैं प्राण हमारे ॥ ४ ॥ ५९ ॥

अथ सोहर और मंगल आरंभ

चैतहिकी तिथिनवमी, तौ नौबति बाजइ हो ॥ बाजइ दशरथ राजा दुवार, कौसल्यारानी मंदिर हो ॥ १ ॥ मिलहु न सखिया सहेलरि, मिलिजुलि चलियौ हो ॥ जहां राजाके जनमे हैं राम करिय नियछावरि हो ॥ २ ॥ केऊ नावैं बाजू और बन्द, केऊ कजरावट हो ॥ केऊ नावैं दखिनवांके वांके चीर, कराहिं निवछावरि हो ॥ ३ ॥ भितरासे निकरीं कौशल्या, अँगनवहिं ठाढी भईं हो ॥ रानी धइ २ हृदय

लगावैं, करहिं निवछावरि हो ॥ ४ ॥ रामके मथवां चँदनवां, बहुत नीक लागइ हो ॥ रचि दीन्हेउ गुरुजी बसिष्ठ, बहुत नीक लागइ हो ॥ ५ ॥ रामनयन रतनारे, काजर भल सोहइ हो ॥ दीन्हेऊँ रचि २ फूआ सुभद्रा, तो पतरी अँगुरियन हो ॥ ६ ॥ रामके मथवां लुट्टरिया, बहुत नीकि लागइ हो ॥ जैसे फूलन बिच कलिया, बहुत छबि लागइ हो ॥७॥ रामके गोडवां घुंघुरुवां, बहुत नीक लागइ हो ॥ नान्हे गुडवन चलत बकइयां, देखत राजा दशरथ हो ॥८॥ जो यह मंगल गावइ, गाइ सुनावइ हो ॥ सो तौ तुलसी जगत तरि जाइ, अमरपद पावइ हो ॥ ९ ॥ १० ॥

जनमेहु कृष्ण मुरारी, जगतहितकारन हो ॥ मथुरा नगर लिहेउ अवतार, गोकुल झूलैं पालन हो ॥ १ ॥ तिथि अष्टमि बुधवार, भादौं बदि रोहिणी हो ॥ सब सोवत सुठि अधिराति, जनम लिहेउ शुभघरी हो ॥२॥ धनि देवकी वसुदेव, जहां प्रभु अवतरे हो ॥ धनि मातु मातु यशोदा बाबा नन्द, जेकरे घर पग धरे हो ॥३॥ धनि धनि सुर नर मुनि सब, जय जय जय करैं हो ॥ दुन्दुभि बाजत देव अकास, सुमन बरसावहिं हो ॥४॥ ब्रजवासी सब गोरस, भरि भरि लावहिं हो ॥ दधिकादव संग बाबा नन्द, सो कीच मचावहिं हो ॥ ॥५॥ बाजत ताल मृदंग, वीण अरु बांसुरी हो ॥ तहँ नाचत गोपी औ ग्वाल, चरणचित बलि भलि हो ॥६॥ यशुमति चीर ओढाई, नौरँग भई ग्वालिन हो ॥ सब सुंदरि बदन निहारि, चकित भई भामिनि हो ॥७॥ ॥ श्रीबलभद्रजी वीर, असुरदल खंडन हो॥

ओ तौ भक्तवत्सल महाराज, यादवकुल मंडन हो ॥८॥ शंकर धरत है ध्यान, सो गोद खिलावहिं हो ॥ सखि मातु यशोमति चूमत, पलना झुलावहिं हो ॥९॥ श्रीनन्ददास सनेह चरण चित लावहिं हो ॥ हरिगुण यह मंगलगीत, गोविंद छबि गावहिं हो ॥१०॥२॥ यशुदा बरजो तू अपना कन्हैया, आंगन मोरे जनि आवैं हो ॥ धोइ डारो माथेका सेन्दुरवा, नयन रस काजर हो ॥ मिसि डारो दांतेके बतिसिया, कन्हैया मोर नहिं जैहैं हो ॥ १ ॥ बाढै मोरे माथेका सेन्दुरवा नयनरस काजर हो ॥ युग युग बाढै दांतेके बतिसिया, कन्हैया घर निति आवै हो ॥२॥ सांझहु आवै सबेरइ होत कान्हा फेरी आवै हो ॥ रानी ठीक दुपहरिया कन्हैया राउर पुनि नित आवै हो ॥ ३ ॥ जे यह मंगल गावइ, गाइ सुनावइ हो ॥ तेकर युगयुग बाढइ सोहाग अमरपद पावइ हो ॥ ४ ॥

चंदनकेरि चउकिया, मोति लागी झालरि हो तेहिपर चढि राम नहाइँ, तो सीता रानी, विहँसै हो ॥ १ ॥ मचियहिं बैठी जो सीता रानी, सब लखि पूछहिं हो ॥ सीता कवन कहेउ व्रत नेम, तौ राम वर पायउ हो ॥ २ ॥ माघहि मास नहानिउँ, अगिनी नाहिं तापेउँ हो ॥ सखि विधिसे रहिउँ एतवार, तौ राम वर पायउँ हो ॥ ३ ॥ कातिक मास नहानिउँ, सुरज पयाँ लागिउँ हो ॥ सखि तुलसीके दियना चढायेउँ, तो राम वर पायउँ हो ॥४॥ भूखी रहिउँ एकादशिया, दुवादशि पारन हो ॥ सब भूखे हैं ब्राह्मण खिआयउँ तो राम वर पायउँ हो ॥ ९ ॥ ४ ॥

ठाढी तिरिया मन झांखइ, सुनहु शीतल रानी हो ।। भैया बिनु रे बालक घर सून, तपसिनि होवेउँ हो ।। काह कहउं मोरी सासु, तौ लाजकी बतियन हो ।। सासु हमारी महल बिच चोरी भइ, तिलरी चोराई गई हो ॥२॥ पहिरउ अनवठ बिछुआ, पलानी औ घूँघुर हो ।। बहु ओढि लेहु झोनी पिछौरी, बृन्दहिवन हेरउ हो ॥३॥ अस जिनी जानहु सासु, कि तिलरी लोहेकै हो ।। सासु तिलरीमें हीरा औ लाल, दिलरिया मोहरकै हो ॥४॥ अस जिन जानहु माई, कि मुरली बाँसेहकै हो ॥ माई मुरलिनि मोर अधार, मुरलियामें जीव बसै हो ।। ५।। ५।।

छोटइ पेड छिउलिया, तौ पतिया कुरुहि गई हो ।। तेहितर होइ ठाढि हरिनियाँ, हरिना बाट जोहइ हो ।। १ ।। कब धौं अइहैं हरिनवाँ, वृन्दहिवन जाब हो ।। आजु नन्दघर बरही बटोर, हरिन मारिजैहैं हो ॥२॥ मचियहिं बैठि यशोदा, तौ हरिनी अरज करै हो ।। रानी बरु मोहि मारि डरावहु, हरिना जिनि मारहु हो ॥ ३ ॥ जाहु हरिनि घर आपन, हम नहिं मारब हो ।। बिहनै बाबुलेकारि बरहिया, हरिन हम मारब हो ॥ ४ ॥ आगेके घोड़वहिं हलधर, पछवां कन्हैया चलें हो ॥ तेहि आरीपासे छेकैनि बहेलिया, हरिना मारि आयेनि हो ॥ ५ ॥ सभवहिं बैठे बाबा नन्द, तौ हरिनि अरज करै हो ॥ राजा मसुआ सिझइ जेवनार, खलरिया मोहि बकसेउ हो॥६॥ जाउ हरिनि घर आपने, हम नहिं मानब हो ।। येहि खलरीके खँजरी मढाउब, बाबुल दुलराउब हो ॥ ७ ॥ ६ ॥

अन्न तौ तजेउ कौशिला रानी, पनियाँ न बूटै हो॥ राजा

तोहिपर तजब परान, तौ एक सन्तति बिनु हो ॥ १ ॥ हँकरहु नगरके विप्र, वेगिहिं चलि आवहिं हो ॥ अब बाउरि रानी कौशिला देइ, तेहिं समुझावहिं हो ॥२॥ आयेनि विप्र बोलाइ, देहरि यहिं ठाढ़ भये हो ॥ रानी दशरथ ऐसा पुरुषवा, काहीके दोष लावहु हो ॥ ३ ॥ लेहु तू अच्छत सोपरिया, बेलेहकै पतियउ हो ॥ रानी पूजउ महादेवकै पिंड, बालक तोहरे जन्मैं हो ॥४॥ होत बिहान पह फाटत, राम जनम भये हो ॥ अब बाजँ लागे अनँद बधाव, उठन लागे सोहर हो ॥५॥ सोनेके खरउआं राजा दशरथ, डेहरियहिं ठाढ भये हो ॥ रानी कहहु तौ हीरा लुटावउँ राम तोहरे जन्मेनि हो ॥६॥ मांगहु लागति गैया, डेवढियहिं ठाढ़ि करौ हो ॥ तब लेहु पीताम्बर धोती, ब्राह्मणको संकल्पहु हो ॥ ७ ॥ हरषि हुलसि राजा दशरथ, हीरा औ मोती बाटैं हो ॥ सब जाचक देहिं अशीष, अवध पुर मंगल हो ॥ ८ ॥ ७ ॥

निरखि निरखि दुलरावहिं गोहिया खेलावहिं हो ॥ माय यशुमति सुख न समात कन्हैया अस बालक हो ॥१॥ नन्द-महर सब घर घर, गोपिन बोलावहिं हो ॥ चलि सब मिलि देहु अशीश, कन्हैया असबालक हो ॥२॥ घर घर बजत बधैया, बँधावन तोरन हो ॥ तहँ मणिमय रचत बजार, कन्हैया अस बालक हो ॥ ३ ॥ देहिं लेहिं नेवछावरि आरति करि करि हो नहिं करैं कछु बरन बिचार, कन्हैया अस बालक हो ॥ ४ ॥ भूषण वसण लुटावैं, हिलि मिलि गावैं हो सब निज पुरवहिं आश, कन्हैया अस बालक हो ॥५॥ सुरपुर बाजति दुंदुभि,

नाच करावहिं हो ॥ सब देव सुमन झरि लावैं, कन्हैया अस बालक हो ॥ ६ ॥ सकल सराहहिं भागि, यशोमति नन्दजीकै हो त्रिभुवन भये जयजयकार, कन्हैया अस बालक हो ॥७॥ दशदिशि उडत गुलाल, भीर ब्रजवासिन हो ॥ कर कञ्चन लिये सब थार, कन्हैया अस बालक हो ॥८॥ गावत चली हैं बधाई, लेइ घरभर मंगल हो ॥ लिये हाथन कलश सुधारि, कन्हैया अस बालक हो ॥९॥ युवतिन लीन्हेउ घेर, यशोमति रानीको हो ॥ लइहौं मैं तो गरयाका हार, कन्हैया अस बालक हो ॥१०॥ जाचक भाट औ बंदी, सबहि गुण गावहिं हो ॥ ११ ॥ नंद दिहेउ बहुदान, धेनु धन बाहन हो ॥ पट भूषण मानिक हार, कन्हैया अस बालक हो ॥१२॥ ब्रजमण्डल सुख सिंधु, उमँगि दशदिशि चलेउ हो ॥ कोई बरनि न पावत पार, कन्हैया अस बालक हो ॥१३॥ कोई बाहर कोई भीतर, हिलमिल नाचहिं हो ॥ सजि सजि बहु रंग सिंगार, कन्हैया अस बालक हो ॥१४॥ जमुनहिं नीर सुहावन पावन लहरत हो ॥ जहँ निरमल बहती बयारि, कन्हैया अस बालक हो ॥१५॥ ब्रज धनि धनि ब्रजवासि, धन्नि वह शुभ घरी हो ॥ जहँ हरिका भयउ अवतार, कन्हैया अस बालक हो ॥१६॥ जे यह मंगल गावइ, गाइ सुनावइ हो ॥ सूरदास परमपद पावै, कन्हैया अस बालक हो ॥१७॥८॥

इति सोहर मंगल समाप्त ।

संगीत

धुधुकट धुधुकट धृकिटि धृकिटि धिम धधिमक धिपमप धधिमक धैय ॥टेक॥ अंकुत गंकुत गमकत घुँघरू, थंकुत थंकुत थंकुत थैया ॥ १ ॥ ठुमुक ठुमुक पग धरत धरणिपर, तन नन नन नन बजत बधैया ॥२॥ सकल काम तजि पृथीराज धुनि, बजत मृदंग गति नचत कन्हैया ॥ ३ ॥ १ ॥

निरतत फनपै सुन मैया ॥ टेक ॥ सहस रंग चाचरि रचि मोहन, यमुनाके नीर तीर बजत बधैया ॥ १ ॥ गोपिन संग राधिका निकसी, ज्यों तारन बिच उगत जुन्हैया ॥ २ ॥ प्रगटिके ताल तान मनमोहन, सहस रंग बाजत सयनैया ॥३॥ गृगीतं गृगीतं तधुव तधुव धुनि, बजत मृदंग गति नचत कन्हैया॥ निरतत फनपैं सुन मैया ॥ ४ ॥ २ ॥

सखीरी नाचत कृष्ण गोरा ॥ छुम छुम छुम छुम छन नन नन नन नाचत कृष्ण गोरी ॥ टेक ॥ तमुरा बीन मुरचंग बजावैं; फुक फुक अबीर उड़ावैं॥ गावै राग रंग मृदंगबजावैं, ठुमकन सन नन नन नन राधा देत तान तोरी ॥१॥ मुगरा चमेली गुलाब सेवतीं, माल गहत वंशीवारो ॥ लालदास रंग कृष्ण पायकें, थिरकत झन नन नन नन नन, सकुचि छोरी छोरी॥२॥३॥

ध्रुपद

देखी दामिनि समान कामिनि श्रीयमुना तट, झमकि झमकि चलत सों मुख चमकै दमकै लिलार ॥ टेक ॥ धनुष रूप भौहैं दृग बान सजे बाघनख बँधि रस तरकस मृगनैनी खेलत शिकार ॥ १ ॥ युगल नैन पलक डोरि सोहै अति रूप ताल, तरुनी तति तमकी तमकी मारत मृग झुण्ड जार ॥ देखी दामिनी समान कामिनि ० ॥ २ ॥ ४ ॥

खेमटा

चितवनिमें नयना लगाय आई राम ॥ टेक ॥ केकरि हो तुम बारी दुलारी, केकरि नारी कहाय आई राम ॥ चितवनिमें० ॥ १ ॥ राजा जनककी बारी दुलारी, रामकी नारी कहाय आई राम ॥ चितवनिमें० ॥२॥ तुलसिदास बलिआश चरणके झाँकि झुकि रामै निहारि आई राम ॥ चितवनिमें नयना लगाय आई राम ॥ ३ ॥ ५ ॥

दादरा चैती

बिहारीसे न बोलबै बरु मथुरा नगर तजि देबै ॥ टेक ॥ दधि बेचन हम जात वृन्दावन, धरि बहियां मोरी तोरी ॥ बिहारीसे न बोलबै० ॥ १ ॥ दधि मोरी खाई मटुकि शिर फोरी, गेण्डुली यमुन बिच बोरी ॥ बिहारी ० ॥२॥ सूरश्यामसे

एती अरज मोरी, छाँडि देबै व्रज खोरी ॥ बिहारीसे न बोलबै० ॥ ३ ॥ ६ ॥

दादरा

चले गये दिलके दावनगीर ॥ टेक ॥ जब सुधि आवै तेरे दरशकी उठै कलेजे पीर ॥१॥ नटवरवेष नैन रतनारे, सुन्दर श्याम शरीर ॥ २ ॥ आपुन जाय द्वारका छाये, खारी नदके तीर ॥३॥ वृन्दावन बंशीबट त्यागो, निर्मल यमुनानीर ॥४॥ व्रजगोपिनको प्रेम बिसारचो, ऐसे भये बेपीर ॥५॥ सूरश्याम ललिता उठि बोली आखिर जाति अहीर ॥ ६ ॥ ७ ॥

दादरा चैती

सैयाँ मरबै जान, कटरिया हमें दो ॥ टेक ॥ ब्याह कियो पिय घर बैठायो, अपना कियेउ पयान ॥१॥ तब मैं रहिलिउँ बारी वयसकी, अब तो भई हौं जवान ॥२॥ सूरश्यामसे एतनी अरज मोर, सैयाँसे कर दो मिलान ॥ ३ ॥ ८ ॥

विरहिनिके बारहमासके-दोहे

चैतहिं चातक रटत है, स्वाति बून्दके हेत ॥ वैसे पिय पिय मैं रटौं, पीय खबर ना लेत ॥१॥ वैशाखहिं बिरहा बढ़ो यौवन धरत न धीर ॥ जो मोहन मिलते सखी, कहती तनुकी पीर ॥ २ ॥ जेठ मास लागे सखी कीजै कौन उपाय ॥ प्यारे

पिउ आये नहीं, वरषा पहुँची आय ॥ ३॥ मास अषाढ लागे सखी, आये ना व्रजराज ॥ मोहि अकेली छोडिकै, तनक न आई लाज ॥ ४ ॥ सावनमें सखि आस करि साज हिंडोल बनाय ॥ नौसत साजि शृङ्गार तिय, पिय मारग दृग लाय॥५॥ भादौंमें लखिकै घटा, चढो अटा हरषाय ॥ मग हेरत अँग थकित भो, नहिं आये यदुराय ॥६॥ क्वार मास फूले सखी, वरषा गई बुढाय ॥ प्यारे पिय आये नहीं, कीजै कौन उपाय ॥ ७ ॥ कातिक शशि पूजति भई, करी अपनो शृङ्गार ॥ कनकथार करमों लियो, धरि फूलनके हार ॥ ८ ॥ अगहन उद्धवजी मिले, पाती दीन्ही आय ॥ योग लीजिये समुझिकै दीन्हे सकल बताय ॥ ९ ॥ पूस पवन डोलत सखी, सिसकत मेरो अंग ॥ हरि बिन, सूनी सेज है, नहिं भावै कछु रंग ॥ १० ॥ माघ मास फूली लता, आयो प्रगट बसंत ॥ पन्थ निहारत मैं थकी, अजहुँ न आयो कन्त ॥ ११ ॥ फागुनमें सब नारि नर, गावत भरे उमंग ॥ चोवा चन्दन अरगजा, छिरकत केशर रंग ॥ १२ ॥ बारहमास बिताय सखि, तेरहैं आये श्याम ॥ कहत दास भगवान तब, पूर्ण भयो सब काम ॥१३॥

फगुआ

अँखिया भरि आये नीर कन्हैया कहां गयो ॥ टेक॥ गोकुल ढूँढो वृन्दावन ढूँढो, ढूँढो फिरउँ नंद गाम ॥ १ ॥ काशी ढूँढो

गयामें ढूँढो, ढूँढो राज प्रयाग ॥२॥ सोरह सौ सखी वृन्दावन झंखैं जाय बसे नदतीर ॥ ३ ॥ सूरश्याम ललिता उठि बोली, आखिर जाति अहीर ॥ ४ ॥ १ ॥

रामनगरके बासी रे सुगना ॥ टेक ॥ केकरे तीर अयोध्या नगरी, केकरे तटपर काशी रे सुगना ॥१॥ सरजूतीर अयोध्या नगरी गङ्गाके तटपर काशी रे सुगना ॥ २ ॥ का करनेको अयोध्या नगरी, का करनेको काशी रे सुगना ॥ ३ ॥ दान करनेको अयोध्या नगरी, मरन तरनको काशी रे सुगना ॥४॥२॥

चौपाई

महावीर सुमिरो सब लायक । भय भंजन मन वांछित दायक ॥ अगणित विघन हरन हनुमाना । सो भरोस मैं मन अनुमाना । दिहिन मोहिं मन प्रभु उपदेशू सो कहिहौं हिय सुमिरि गणेशू ॥ कहौं हृदय गुरुको धारि ध्याना । तेहिते पावों निर्मल ज्ञाना विनती एक कहौं समुझाई जेहि विधि सब भव-पारहि जाई ॥ आयो कलियुग महा अपारा । मायामें फंसि मुयो संसारा ॥ दया धरमकी डगर भुलाई साधु निरादर जहं चलि जाई ॥ दयारहित सकल संसारा । को न आतम करहि विचारा ॥

दोहा–अरज हमारी सुनहु प्रभु, कृष्णचन्द्र महराज ॥
मैं तो निपट गंवार हौं, राखो मेरी लाज ॥ १ ॥

कहत दास भगवान यह, सब संतन शिर नाय॥
अक्षर जोड़के पिंगलें, दीजै प्रभू बताय ॥ २ ॥

चौ०—लख चौरासी योनिन जाई । पाई कलेश नाना विधि भाई॥ बार बार तब टेर सुनाई । भई दया मानुष तनु पाई ॥
जन्मतकै माया लपटानी । धन दौलत सुत तिया सयानी ॥
यहिमें फँसिकै जन्म गँवाई । सब कोइ संग लिये नहिं जाई॥
देखउ टुक तुम पलक उघारी । मायाजाल सकल संसारी ॥
सबको तजै राम रट लावै । सो नर सपनेहुँ दुःख न पावै ॥
बालापनहि धर्म मन लावै । सुखी रहै दुःख कभी न पावै ॥
त्रेता धर्म करै जगमाहीं । ह्यां सुख बहुत वहां दुःख नाहीं ॥
धर्म कर्म कर करै विचारा । सो पूरुष कलिमें निस्तारा ॥
धन तिय तैंसे बाहर होई । फिर फिर जन्म न इनमें होई ॥
अंतकाल वैकुंठमें जावै । राम राम कह ध्यान जो लावै ॥
जगमें बुद्धिमान है सोई । जाके मोह क्रोध नहिं होई ॥
कहै दास भगवान पुकारे । अब प्रभु करहु जगतसे न्यारे ॥
चरणकमल पर शीश नवावों । राम राम निर्मल पद गावों ॥
कैतनो करै जो लाख उपाई । बिन रघुवीर पार नहिं पाई ॥
बार बार मैं बचन सुनाई । सज्जन पुरुष सुनो मन लाई ॥
भूल चूक क्षमियो सब मोरी । बिनती करों दुहूँ कर जोरी ॥ १॥

भजन

जो प्रभु मेरी चूक बिसारो ॥टेक॥ मैं तो अनेक जन्मको, नखशिख भरो बिकारो॥ सुर नर मुनिन ध्यान नहिं छूटै, सुधि बिसरे न बिसारो ॥ १ ॥ जलधर धार भार जगतीको, गनि नहिं जात गणारो॥ जो कोऊ सोऊ गनि डारै, अवगुण गनि नहिं सकत हमारो ॥ २ ॥ कागज भूमि सिन्धु मसि आनी, गिरि कज्जल मसि डारो॥ सुरतरुवरकी बनी लेखनी, लिखित शारदा हारो॥३॥ राम अनन्त कहांतक वरणों, वेद न पावत पारो॥ तुलसिदास प्रभु आश चरणकी, प्रभुके चरण चित डारो ॥ ४ ॥ १ ॥

सुनहु भरत दै कान सुयश हनुमान बलीको ॥टेक॥ गिरि सुबेल पर्वतके ऊपर, शयन करत दो भाई। चारों ओर बीर सब बैठे, दिये लँगूर फिराई॥ चौकी कठिन कपीशकी है जहँ, पवनहुकी गम नाहीं॥ कौन बीर कौने मारगसे, हरेउ नृपति क्षणमाहीं॥ सुयश० ॥१॥ सारी रैनि गई बीति, लगी लोहिया पैठारी। शब्द किलकिला जोर, बाजी बीरनकी तारी॥ चौंक उठे पवनके नंदन, आसन देख्यो सून। लजित भये मुख बात न आवत, दलित भये दुख दून॥ सुयश०॥२॥ कोपे पवनकुमार,

आज नभ नखसे फारौं । शशि मेरो भंडार इक्षुसे उक्ष पवारौं ॥ शपथ करौं रघुनाथकी, जनु अंजनिसुत नाहीं । तीनहुँ लोक बिलोकत, प्रलय करौं क्षणमाहीं ॥ सु० ॥ ३ ॥ डोलत मेरु सुमेरु, श्रवण मुनि शेष सकाने । सहि न जात महि भार, आज बलवान रिसाने ॥ कँपित भये सब देवता, मारग दीन्ह बताय । पटकि लँगूर वीर अति गर्जा, पैठि पतालहिं जाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ देखत नगर अनूप नगर, भूप घर बजत बधाई । जमकातारि यमराज, नृपति द्वारे घहराई ॥ मायादेवी टारि प्रभु, बैठे वदन छिपाय । मधु मेवा पकवान मिठाई, आप प्रगट होय खाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ बलिदेवनके भये कुबेर, दोनों नहवाये । चोवा चन्दन अगर कुमकुमा, पीताम्बर पहिराये ॥ खैंचो खड्ग हाथमें लीन्हो, सुमिरि आपनो नाथ । जो एहि अवसर आव उबारे, नाहिं छीनो दोउ माथ ॥ सु० ॥ ६ ॥ पहले सुमिरे गुरु आपनो, पिता चरण चित लाय ॥ कौशल्याके धर्म मनावत, राखत हृदये लाय ॥ फिर सुमिरे हठ नाम जो, गाढे आवैं काम । तारन तरन सदा सन्तनके मारुतसुतकर नाम ॥ सु० ॥ ७ ॥ कोपे पवनकुमार, मेघध्वनि गर्ज सुनाये । दुर्जन दलि मलि दिये, गर्भिणी गर्भ नशाये ॥ मारे असुर सँहारि, क्रोधसे दिये बहाये । रुधिरसे सरिता बहि निकली, मांस माटी हो जाये ॥ सु० ॥ ८ ॥

महिरावन वध किये, राम कटकहि ले आये। भयो कटकमें शोर, सुने दुंदुभी बजाये॥ सेवक सीतारामके, तुलसी परम अजीत। जो यह पद दृढ हियसे गावै, परम हमारो मीत॥ सु० ॥९॥२॥

सवैया छन्द

बिन पंडित ग्रन्थ प्रकाश नहीं, बिन ग्रन्थ न पावन पंडित भा। जग चन्द्र बिना न विराजति यामिनि, यामिनहू बिन चन्द्र अभा॥ सुसभाहिके देखत साधु जु होत, रु साधुहिते; शुभ होति सभा। छबि पावत है मधु माधवते, मधुको अति माधवहू सुप्रभा॥१॥ महिमा गुणवंतकी दास बढ़ै, बकसै जब दान जवाहिरको॥ गुणवन्त हुये पुनि दाननिहुँको, यश फैल दिगन्तके बाहिरको॥ भृंग मालतिसों अति नेह करै, जिमि सो रसिकानमें जाहिर है॥ अरु भौंरहुको अति आदर कीन्ह, सुवासमें मालति माहिर है॥

चौपाई–सावन मास पक्ष उजियारा। सप्तमी दिवस रविवारा॥ संवत उनइससौ उनचासा। अट्ठारहसौ बानवे ईसा॥ कह भगवानदास सिर नाई। कृपासिन्धु हरि कीन्ह सहाई॥ रच्यो ग्रन्थ श्रम कीन्ह अपारा। विविध भांति कर यतन बिचारा॥ जो कछु पावहु शब्द बिरुद्धा। सज्जन पुरुष करहु सो शुद्धा॥

दोहा–सन संवत दोनों यही, जानत सकल जहान।
राधो पदको ध्यान करि, कियो ग्रन्थ सुखखान॥

सोरठा–धुन होली चौताल, गावहिं रसिक सुजान पद॥
शोधित प्यारेलाल, दास रसिक भगवान यह॥

इति होली चौताल संग्रह प्रथम भाग सम्पूर्ण

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

